कृषि | विश्लेषण | जल प्रबंधन

कुल पृष्ठ: 40

स्वदेशी पत्रिका

मूल्य 15/—रू.

श्रावण–भाद्रपद 2080, सितंबर 2023

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश सरकार ने कसा माफिया, गुंडे, बदमाशों और आतंक पर शिकंजा

मध्यप्रदेश शांति का टापू है, यहाँ अशांति फैलाने वालों की खैर नहीं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के कड़े फैसले और प्रशासनिक कसावट से प्रदेश में कानून का राज स्थापित है। प्रदेश की शांति व्यवस्था में खलल डालने की कोशिश करने वालों को कड़ी कार्रवाई का सामना करना पड़ रहा है। माताओं, बहनों, बेटियों की ओर गलत नजर उठाने वालों के घरों पर बुलडोजर चल रहे हैं। बच्चियों के साथ दुराचार करने वालों को मृत्युदंड दिया जा रहा है। प्रदेश में एंटी माफिया अभियान चलाकर भू-माफिया, चिटफंड माफिया, शराब माफिया, खनन माफिया, राशन माफिया, मिलावट माफिया और दबंगों के विरुद्ध सख्ती से कार्रवाई की जा रही है।

◻ तोड़ी माफिया की कमर

प्रदेश सरकार ने भू-माफियाओं से हजारों एकड़ से ज्यादा सरकारी भूमि मुक्त कराई है। अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध 1 हजार 161 प्रकरण दर्ज कर 605 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। शासकीय भूमि पर अवैध कब्जा करने वाले 227 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका एवं 582 आरोपियों के विरुद्ध जिला बदर की कार्रवाई की। आदतन अपराधियों और गुंडों पर भी पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है।

◻ पुलिस कमिश्नर प्रणाली

कानून-व्यवस्था में वर्ष 2022 ऐतिहासिक उपलब्धियों वाला रहा। भोपाल और इंदौर की कानून-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाये रखने के लिये पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू की गई।

◻ नक्सली उन्मूलन

पिछले 23 वर्षों में पहली बार वर्ष 2022 में एक वर्ष में एक करोड़ 14 लाख रुपए के 6 इनामी नक्सली मार गिराये गये। इतिहास में प्रथम चार डिवीजनल कमांडर स्तर के नक्सली को मार गिराया गया और 2 एके-47 जब्त की गई।

गांजे की खेती करने वाले धराए

अवैध शराब बेचने वालों को पकड़ा

◻ ऑपरेशन मुस्कान

प्रदेश में जोर-जबरदस्ती, बहला-फुसलाकर विवाह और धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए धर्म स्वातंत्र्य विधेयक लागू। इसमें 110 से अधिक प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। वर्ष 2018 से अब तक बच्चियों से दुष्कर्म करने वाले 42 दोषियों को मृत्युदंड की सजा। ऑपरेशन मुस्कान में वर्ष 2022 में अपहृत 9 हजार 413 बालिकाओं और 2 हजार 205 बालकों को मुक्त कराया गया।

◻ साइबर अपराधों पर अंकुश

राज्य सरकार साइबर अपराधों से निपटने के लिए सजग। सोशल मीडिया पर निरंतर नजर। देश को कमजोर करने की गतिविधियों में संलग्न संगठनों पर लगातार कार्रवाई।

◻ डकैतों का हो गया सफाया

प्रदेश में डकैतों का आतंक अब पूरी तरह खत्म। डकैतों के सभी बड़े लिस्टेड गैंग का खात्मा करने में पुलिस को बड़ी सफलता मिली। सूदखोरों पर पुलिस ने शिकंजा कसा। नशे और इसकी लत को रोकने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं।

◻ **खनन माफिया:** 13 हजार 178 अपराध दर्ज। 24 हजार 092 से अधिक चार पहिया वाहन 3 लाख 54 हजार 528 घन मीटर अवैध रेत जब्त। 04 रासुका एवं 34 जिला बदर।

◻ **राशन माफिया:** 1626 अपराध दर्ज कर 1780 आरोपी गिरफ्तार कर लगभग 91 करोड़ रुपये मूल्य के खाद्य पदार्थ जब्त एवं 68 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई।

◻ **चिटफंड माफिया:** 1 लाख 47 हजार 532 से अधिक निवेशकों को करोड़ों की राशि वापस दिलाकर राहत पहुँचाई गई।
860 प्रकरण दर्ज।

◻ **शराब माफिया:** 4 लाख 21 हजार से अधिक प्रकरणों में 3 लाख 57 हजार से अधिक आरोपी गिरफ्तार।
40 लाख 72 हजार लीटर अवैध शराब एवं 4005 वाहन जब्त।

◻ **मिलावट:** 4392 प्रकरण दर्ज एवं 657 आरोपी गिरफ्तार।
लगभग 27 करोड़ रुपये के मिलावटी खाद्य पदार्थ जब्त।
85 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई।

(01 अप्रैल 2020 से 31 मार्च 2023 तक)

पुलिस की पैदल गश्त से अपराधियों में खौफ, प्रधानमंत्री ने भी पहल को सराहा

प्रदेश पुलिस द्वारा मूलभूत पुलिसिंग में शुरू की गई पैदल गश्त की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी प्रशंसा की है। बीट व्यवस्था, माइक्रो चीट सिस्टम, औचक निरीक्षण, कोचिंग ऑपरेशन और रात्रि गश्त व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

पुलिस के सड़क पर मौजूद होने का असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण के साथ सामान्य व्यवस्था बनाए रखने में प्रभावी होता है। सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों में चल रही भ्रांतियों और गलत जानकारियों का तत्काल खंडन किया जा रहा है। आवश्यकता होने पर उपयुक्त कार्रवाई भी तत्काल सुनिश्चित की जा रही है।

असली हीरो को सम्मान

मध्यप्रदेश में अपराधियों का सामना करने में साहस और वीरता का परिचय देने वाले नागरिकों को असली हीरो सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है। इनमें बड़वानी की वर्षा बाई बारेला, कमला बाई और भूरी बाई, मुरैना के मुकेश सिंह गुर्जर, दमोह की मोनिका पिंकी अहिरवार, इंदौर की प्रगति शिवनी, सुशी और छतरपुर के शिवम तिवारी को असली हीरो प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए हैं।

पुलिस को मिले पुरस्कार

प्रदेश को इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा डिजिटल इंडिया अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया है। प्रदेश को ई- विवेचना एप के उपयोग के लिये *इनिशिएटिव एट ग्रास रूट* लेवल केटेगरी में प्रथम पुरस्कार मिला। एन्युअल इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी समिट में मध्यप्रदेश साइबर पुलिस को पुलिस की क्षमता निर्माण में प्रथम पुरस्कार और *साइबर कॉप ऑफ द ईयर में दूसरा पुरस्कार मिला है।*

जनसंपर्क विभाग

स्वदेशी पत्रिका

अ नु क्र म

वर्ष–31, अंक–9
श्रावण–भाद्रपद 2080 सितंबर 2023

संपादक
अजेय भारती

सह–संपादक
अनिल तिवारी

पृष्ठ सज्जा एवं टंकन
सुदामा दीक्षित

कार्यालय
धर्मक्षेत्र, सेक्टर–8, बाबू गेनू मार्ग
रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022
से प्रकाशित

दूरभाष : 011–26184595

स्वदेशी जागरण समिति की ओर से डॉ. अश्वनी महाजन द्वारा कॉम्पीटेंट बाइन्डर्स (प्रिंटिंग यूनिट), नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 से मुद्रित।

पाठकनामा / उन्होंने कहा **4**
समाचार परिक्रमा **35-38**

तृतीय मुख्य पृष्ठ **39**
चतुर्थ मुख्य पृष्ठ **40**

आवरण कथा – पृष्ठ–06

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का अर्थशास्त्र

डॉ. अश्वनी महाजन

1 मुख्य पृष्ठ
2 द्वितीय मुख्य पृष्ठ

08 चंद्रयान–3
चंद्रयान–3 के वैज्ञानिक और आर्थिक पहलू ..... डॉ. धनपत राम अग्रवाल

11 चंद्रयान–3
चंद्रयान और अंतरिक्ष अनुसंधान के नये क्षितिज ..... डॉ. जया शर्मा

14 चंद्रयान–3
अंतरिक्ष विज्ञान के विकास में पूंजी निवेश की दरकार ..... अनिल तिवारी

16 चंद्रयान–3
भारत की अंतरिक्ष में गर्व भरी उड़ान ..... अनिल जवलेकर

18 चंद्रयान–3
चंद्रयान–3 से हासिल होगा अनुसंधान एवं विकास और ग्रामीण विकास का दोहरा लक्ष्य ..... श्रीधर वैंबू

20 चंद्रयान–3
चंद्रयान–3: वैज्ञानिक पक्ष ..... विनोद जौहरी

22 चंद्रयान–3
पश्चिमी देशों का चिढ़ना दर्शाता है कि भारत आगे बढ़ रहा है ..... प्रहलाद सबनानी

24 श्रद्धांजलि
बिंदेश्वरी पाठक की कमी खलेगी ..... नरेंद्र मोदी

26 विश्लेषण
ब्रिक्सः बड़ा लेकिन बेहतर! ..... के.के श्रीवास्तव

28 मुद्दा
उच्चतम न्यायालय और लैंगिक रूढ़िवादिता ..... डॉ. जया कक्कड़

30 खेती–बारी
अब अन्न धन से संपन्न हम ..... देविन्दर शर्मा

32 विचार
देश के विखंड़न के बीज बोती जातिगत जनगणना ..... डॉ. सूर्यप्रकाश अग्रवाल

34 संस्कृति
विश्व में डंका बजाती, भारतीय सनातन संस्कृति ..... अनुपमा अग्रवाल

पाठकनामा

गौमाता क्यों हो रही बेसहारा?

भारतीय कृषि हमेशा से पशु आधारित रही है। कृषि के अलावा पशु वजन ढोहने, दूध उत्पादन, चमड़ा उत्पादन, भोजन इत्यादि में भी बहुत उपयोगी है। वहीं अगर पशुओं में गोवंश की बात करें तो भारतीय प्राचीन काल से ही गोवंश को पूजनीय मानते है और गाय को माता के रूप में पूजते हैं। फिर भी भारत में लगभग 50 लाख से भी ज्यादा गोवंश बेसहारा है।

भारत में सबसे ज्यादा दूध उत्पादन गाय द्वारा होता है। गाय से प्राप्त वस्तुओं, दूध, दही, घी, गोबर व गोमूत्र को हम पंचगव्य कहते हैं। ये पंचगव्य स्वास्थ्य के लिए लाभदायक तो है ही, साथ–साथ सनातन धर्म में पूजापाठ व औधषी में भी प्रयोग किया जाता है।

अनेक रूप से उपयोगी व पूजनीय गोवंश के बेसहारा होने पर विशेषज्ञों की राय है कि गाय की औसत आयु 15 वर्ष होती है और वह आमतौर पर 7 साल तक दूध देती है। वहीं कृषि में मशीनरी के अधिक उपयोग के चलते गोवंश (नर) भी कृषि से दूर हो रहे है। दूध न देने व कृषि में घटती उपयोगिता के चलते गोपालक को गोवंश एक बोझ लगने लगता है। जिसके चलते अधिकांश गोपालक उसका परित्याग कर देता है।

विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि विदेशी नस्ल की गायों की संख्या में वृद्धि के कारण भी गोवंश बेसहारा हो रही है। क्योंकि विदेशी गाय दूध का उत्पादन तो अधिक करती है, परंतु वह दूध ए–1 होता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसके साथ–साथ विदेशी गोवंश के नर भी कृषि व अन्य कार्यों हेतु अनुपयोगी सिद्ध हो रहे है। जिसके चलते उनको खुला छोड़ दिया जाता है।

गोवंश को संरक्षित व प्रोत्साहन देने के लिए सरकारें अनेक योजनाएं भी चला रही है। उत्तर प्रदेश द्वारा अभी तक 6889 गोआश्रय स्थल खोले गये है, जिसमें 11.89 लाख गोवंश संरक्षित है। वहीं उ.प्र सरकार ने 'मुख्यमंत्री सहभागिता योजना' 'नन्द बाबा दुग्ध मिशन योजना' आदि चलायी हुई है। इसके अलावा अन्य राज्यों में भी गोवंश संरक्षण हेतु योजनाएं चल रही है। इन सब योजनाओं के बावजूद भी लाखों की संख्या में गोवंश बेसहारा होकर सड़कों, रेलवे लाईन, खेतों आदि में घुमने पर विवश है। जिससे आमजन व किसानों को तो परेशानियां हो ही रही है, उसके साथ–साथ गोवंश भी अनेक दुर्घटनाओं के शिकार हो रहे हैं।

सुदामा भारद्वाज, बागपत, उत्तर प्रदेश

आवश्यक नहीं कि इस अंक के भीतर प्रस्तुत लेखकों के विचार स्वदेशी पत्रिका के संपादक मंडल के विचारों से मेल खाते हों। पाठकों की जानकारी के लिए उन्हें यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

संपादकीय कार्यालय

''धर्मक्षेत्र'' शिव शक्ति मन्दिर, सैक्टर–8, रामकृष्णपुरम्,
नयी दिल्ली–110022

दूरभाष : 011–26184595 • ई–मेलः
swadeshipatrika@rediffmail.com

अगर आप घर बैठे स्वदेशी पत्रिका चाहते हैं तो डिमांड ड्राफ्ट, मनीऑर्डर अथवा चेक द्वारा शुल्क *'स्वदेशी पत्रिका'* दिल्ली के नाम भेजने का कष्ट करें।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 150 रुपए
आजीवन सदस्यता शुल्क: 15,00 रुपए

यदि शुल्क जमा करने के उपरांत भी आपको पत्रिका समय पर उपलब्ध नहीं हो पा रही है तो तुरंत पत्रिका कार्यालय को सूचित करें।

या आप सीधे बैंक ऑफ इंडिया, खाता नं. 602510110002740
IFSC : BKID 0006025 (Ramakrishnapuram)

कहा–अनकहा

मेरा मानना है कि चंद्रयान की सफलता पूरी मानव जाति के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। यह दर्शाता है कि भारत ने मानवता की सेवा में आधुनिक विज्ञान के साथ–साथ अपने समृद्ध पारंपरिक ज्ञान आधार का उपयोग कैसे किया है।

द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति, भारत

अब तक चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर कोई नहीं उतरा था. हमारे वैज्ञानिकों ने वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया भर की मानवता के लिए भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अपना चंद्र मिशन उतारने वाला पहला देश बनाने की उपलब्धि हासिल की।

डा. मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

"भारत का सफल चंद्रमा मिशन अकेले भारत का नहीं है... एक पृथ्वी, एक परिवार एक भविष्य का हमारा दृष्टिकोण दुनिया भर में गूंज रहा है... चंद्रमा मिशन उसी मानव केंद्रित दृष्टिकोण पर आधारित है। इसलिए, यह सफलता पूरी मानवता की है।"

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

यह वह यात्रा है जो हमने चंद्रयान–1 से शुरू की थी, चंद्रयान–2 में भी जारी रही। चंद्रयान–1 और 2 के निर्माण में योगदान देने वाली सभी टीमों को चंद्रयान–3 का जश्न मनाते समय याद किया जाना चाहिए और धन्यवाद दिया जाना चाहिए।

एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो

संपादकीय

भारत की अध्यक्षता, जी-20 के परिणाम और ग्लोबल साउथ

जी–20 शिखर सम्मेलन 10 सितंबर, 2023 को भारत की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह आयोजन भारत के लिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह भारत के लिए अपनी विविध प्रकार की उपलब्धियों का प्रदर्शन करके दुनिया को प्रभावित करने का एक अवसर था। भारत के कौशल की भी परीक्षा चल रही थी कि क्या हम वैश्विक नेताओं को रूस–यूक्रेन संघर्ष जैसे विवादास्पद मुद्दों पर आम सहमति पर पहुंचा सकते हैं, और विकासशील देशों, जिन्हें हम ग्लोबल साउथ कहते हैं, के सामने आ रही आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान ढूंढ सकते हैं। भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी–20 शिखर सम्मेलन और उसके निष्कर्षों को लेकर न केवल भारत बल्कि अन्य विकासशील देशों में भी काफी उत्सुकता थी। भारत की ओर से इसके लिए न केवल भौतिक तैयारी, बल्कि बौद्धिक तैयारी भी पूरी गंभीरता से की गई थी। अब जब यह सम्मेलन संपन्न हो गया है तो यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि इस सम्मेलन के निष्कर्ष दुनिया के लिए क्या मायने रखते हैं? यह समझना होगा कि यह सम्मेलन कई मायनों में बहुत महत्व रखता है।

जी–20 दिल्ली शिखर सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण परिणाम, समूह में अफ्रीकी संघ का प्रवेश रहा। अफ्रीकी संघ के शामिल होने से पहले, जी–20 दुनिया की दो–तिहाई आबादी, दुनिया की 85 प्रतिशत जीडीपी और 75 प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करता था। लेकिन जी–20 में अफ्रीकी संघ के प्रवेश के बाद, अब यह दुनिया की 82 प्रतिशत आबादी, दुनिया की 88 प्रतिशत जीडीपी और लगभग 84 प्रतिशत वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करता है। वैश्विक तनाव और उथल–पुथल के बावजूद, न केवल घोषणा पर आम सहमति बन सकी, बल्कि जो निष्कर्ष निकले, वे इस सम्मेलन में भारत द्वारा दिए गए ध्यय वाक्य – एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य – के अनुरूप प्रतीत होते हैं। अब यह देखने का समय है कि दिल्ली घोषणापत्र किसी भी तरह से विकसित देशों की ओर झुका हुआ नहीं था, बल्कि हम कह सकते हैं कि इस बार इसका फोकस वैश्विक दक्षिण यानि ग्लोबल साउथ पर अधिक था।

सम्मेलन की पहली उपलब्धि यह रही कि सदस्य देश इस बात पर सहमत हुए कि बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) को बेहतर, बड़ा और अधिक प्रभावी बनाया जाए, ताकि वे दुनिया के देशों की अपेक्षाओं के अनुरूप अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें। भारत हमेशा से वैश्विक वित्तीय ढांचे में सुधारों का पक्षधर रहा है। इस संदर्भ में, इस बात पर सहमति हुई कि बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) की पूंजी संरचना में बदलाव होना चाहिए। इस शिखर सम्मेलन में, एक स्वतंत्र पैनल की सिफारिशों के अनुसार, पूंजी पर्याप्तता ढांचे (सीएएफ) के माध्यम से इन एमडीबी में सुधार सुनिश्चित करने पर सहमति व्यक्त की गई है। इस शिखर सम्मेलन की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि 'क्रिप्टो' को विनियमित करने को लेकर है। भारत ने कराधान के माध्यम से क्रिप्टो को विनियमित और नियंत्रित करने के लिए अपने स्वतंत्र प्रयास किए हैं। गौरतलब है कि वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने पहले भी इस संबंध में दुनिया से समन्वय और आपसी सहयोग का आह्वान किया था। जी–20 शिखर सम्मेलन इस संबंध में वैश्विक सहमति बनाने का एक उपयुक्त अवसर था। दिल्ली घोषणा में कहा गया है कि जी–20 देश क्रिप्टो परिसंपत्ति पारिस्थितिकी तंत्र में तेजी से हो रहे बदलावों के जोखिमों पर बारीकी से नजर रखना जारी रखेंगे। इसके अलावा घोषणा में विशेष रूप से, सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी), डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे का निर्माण, डिजिटल इको–सिस्टम को बढ़ावा देने पर अलग–अलग उप–खंड हैं। इन मुद्दों के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत पहले से ही इन मुद्दों पर अपने समकक्ष देशों से बहुत आगे है।

लंबे समय से विकसित और विकासशील दोनों प्रकार के देश बहुराष्ट्रीय कंपनियों, खासकर तकनीकी कंपनियों, सोशल मीडिया कंपनियों और ई–कॉमर्स कंपनियों द्वारा कर परिहार (टैक्स अवॉयडेंस) की समस्या से जूझ रहे हैं। इन कंपनियों के बहुराष्ट्रीय होने के कारण कर प्रणाली पर वैश्विक सहमति के अभाव में इन कंपनियों को उचित तरीके से कर के दायरे में लाना मुश्किल हो रहा है। इस संबंध में आम सहमति के संदर्भ में जी–20 दिल्ली घोषणापत्र में व्यापक चर्चा की गई है। यह कहा जा सकता है कि यह 'कार्य प्रगति पर' है। भविष्य में इस पर वैश्विक सहमति बनने पर इन कंपनियों से टैक्स वसूलना आसान हो जाएगा। इससे विकसित और विकासशील दोनों देशों की जनता को फायदा होगा। यह इस सम्मेलन की तीसरी बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। आज कई विकासशील देश कर्ज के जाल में फंसे हुए हैं, जिसके कारण उनकी अर्थव्यवस्थायें संकट में है। जी–20 दिल्ली घोषणापत्र में वैश्विक ऋण कमजोरियों के प्रबंधन का आह्वान किया गया है। घोषणापत्र में जाम्बिया, घाना, इथियोपिया और श्रीलंका की ऋण स्थिति को हल करने की भी बात कही गई है। यह इस शिखर सम्मेलन की चौथी बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

इस शिखर सम्मेलन की एक और बड़ी उपलब्धि जलवायु वित्त को लेकर है। जलवायु परिवर्तन दुनिया के सामने एक बड़ा संकट बनकर उभर रहा है। जलवायु परिवर्तन की चुनौती की भयावहता की तुलना में इससे निपटने के प्रयास बेहद अनिर्णायक और आधे–अधूरे प्रतीत होते हैं। पहले विकसित देशों द्वारा इस बात पर सहमति व्यक्त की गई थी कि जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए उनकी ओर से 100 अरब डॉलर की सहायता प्रदान की जाएगी। लेकिन अब तक, वे वायदे के अनुसार सहायता प्रदान करने में विफल रहे हैं। इतना ही नहीं, वे इस संकट से निपटने के लिए तकनीक हस्तांतरित करने को भी तैयार नहीं हैं। मानवता विकसित देशों द्वारा यह सहायता देने के लिए अनिश्चित काल तक प्रतीक्षा नहीं कर सकती। इस जी–20 सम्मेलन के दिल्ली घोषणापत्र में जलवायु और सतत वित्त पर काम करने का आह्वान किया गया है, ताकि इसके माध्यम से मानवता के सामने आने वाली सबसे बड़ी समस्या से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके। यह कहा जा सकता है कि पिछले सम्मेलनों की तुलना में, दिल्ली सम्मेलन को वैश्विक समस्याओं, खासकर विकासशील दुनिया की समस्याओं के मजबूत समाधान की दिशा में बिना किसी पूर्वाग्रह के आगे बढ़ने में सफल माना जा सकता।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का अर्थशास्त्र

23 अगस्त 2023, एक एतिहासिक दिन के रूप में माना जाएगा, जब भारत के चंद्रमा मिशन के चंद्रयान–3 ने चंद्रमा पर पहुंचकर सॉफ्ट लैंडिंग करने में सफलता प्राप्त की। यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का तीसरा चंद्रमा मिशन था और चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव में पहुंचने वाला यह दुनिया का पहला उपकरण था। इस मिशन की शुरूआत 14 जुलाई 2023 को शुरू की गई थी और 23 अगस्त 2023 को लैंडर विक्रम चंद्रमा की सतह पर उतर गया। गौरतलब है कि भारत का पहला चंद्रमा मिशन चंद्रयान–1 अक्टूबर 22, 2008 को छोड़ा गया था और यह चंद्रमा की संरचना, खनिज विज्ञान और उसकी सतह की विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए कई उपकरणों को साथ लेकर गया था। चंद्रमा के बारे में हमारी समझ विकसित करने में इस अभियान का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

चंद्रयान–2 22 जुलाई, 2019 को छोड़ा गया था, इसमें एक ऑर्बिटर, लैंडर और एक रोवर शामिल था। लैंडर विक्रम और रोवर प्रज्ञान को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरना था, लेकिन विक्रम लैंडिंग स्थल से लगभग 600 मीटर दूरी पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन इस अभियान का ऑर्बिटर अभी भी काम कर रहा है और चंद्रमा के बारे में आंकड़ें एकत्र कर रहा है। यानि कहा जा सकता है कि भारत का चंद्रमा मिशन अभी तक काफी हद तक सफल रहा है और चंद्रयान–3 के चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर उतरने के बाद भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुंच चुका है। दुनिया में मात्र कुछ ही देश ऐसे हैं, जिनका अपना एक स्वआधारित अंतरिक्ष कार्यक्रम है। भारत के अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन, युरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी, जापान, कनाडा, साऊथ कोरिया, इजराइल आदि के अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम हैं। लेकिन देखा जाए तो भारत दुनिया का चौथा ऐसा देश है, जिसने चंद्रमा की सतह पर अपना वाहन उतरा है, लेकिन चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर वाहन उतारने वाला भारत पहला देश है।

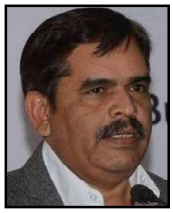

दुनिया में अंतरिक्ष मिशनों की बड़ी लागत रही हैं, लेकिन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रमों का बजट दुनिया के लिए एक मिसाल है।

– डॉ. अश्वनी महाजन

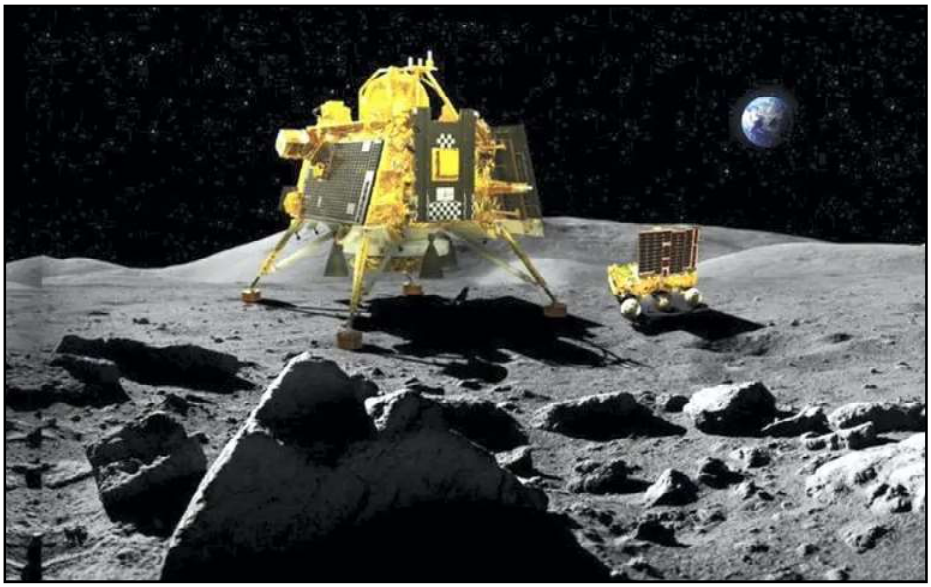

माना जाता है कि चंद्रमा की खुरदरी सतह और गुरूत्वाकर्षण के अभाव में चंद्रमा पर अंतरिक्षयान उतारना काफी कठिन है। भारतीय वैज्ञानिकों ने समझ–बूझ और चतुराई से लैंडर विक्रम को चंद्रमा पर उतरा है, जिसके लिए भारतीय वैज्ञानिक बधाई के पात्र हैं। अमरीका दुनिया की आर्थिक, सामरिक एवं तकनीक की महाशक्ति माना जाता है, इसलिए स्वभाविक तौर पर अमरीका द्वारा सबसे पहले चंद्रमा मिशन शुरू किया गया था। भारत ने अपना अंतरिक्षयान आर्यभट को वर्ष 1975 में अंतरिक्ष की कक्षा में भेजा था। 358 किलोग्राम के इस अंतरिक्षयान में पृथ्वी के वातावरण और रेडिएशन बेल्ट के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक उपकरणों को भेजा गया था। उसके बाद 1982 से प्रारंभ इनसेट अंतरिक्षयानों को भेजने की प्रक्रिया शुरू हुई और वर्तमान में भारत के 17 इनसेट अंतरिक्षयान अंतरिक्ष की कक्षा में हैं। तीन चंद्रमा मिशनों के अलावा वर्ष 2013 में भारत ने अपना मंगलयान मंगल ग्रह के लिए छोड़ा था, जो सितंबर 2014 में मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचा और अभी भी वह मंगल ग्रह का अध्ययन कर रहा है। भारत अपना पहला मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम 2023 में ही शुरू करने वाला है।

चंद्रयान–3 की सफलता के बाद भारत के प्रति दुनिया के रवैये में महत्वपूर्ण बदलाव आने वाला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि अमृतकाल के प्रारंभ में ही भारत के चंद्रयान–3 की सफलता इस अमृतकाल में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की तरफ पहला कदम है।

माना जा सकता है कि अमेरिका, रूस और चीन के बाद अब भारत दुनिया के अंतरिक्ष कार्यक्रम का एक प्रमुख खिलाड़ी बन गया है। सामान्यतौर पर भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रमों की दुनिया भर में प्रशंसा होती है, लेकिन उसके बावजूद भारत में कुछ लोग अंतरिक्ष कार्यक्रम की यह कहकर आलोचना करते हैं कि भारत एक गरीब देश है और यह इस प्रकार के कार्यक्रमों की 'विलासिता' के खर्च को वहन नहीं कर सकता। उनका यह कहना है कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर किए जाने वाले खर्च की बजाय देश में गरीबों के लिए सुविधाएं जुटाने के लिए करना चाहिए। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर किए गए खर्च की बजाय यदि अपने देश की सुरक्षा पर अधिक खर्च किया जाए तो वो बेहतर होगा।

चंद्रयान–3 की सफलता के बाद भारत के प्रति दुनिया के रवैये में महत्वपूर्ण बदलाव आने वाला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि अमृतकाल के प्रारंभ में ही भारत के चंद्रयान–3 की सफलता इस अमृतकाल में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की तरफ पहला कदम है। गौरतलब है कि पिछले कुछ समय से दुनिया की जीडीपी रैंकिंग में भारत वर्ष 2014 में 10वें स्थान से आगे बढ़ता हुआ वर्ष 2023 में 5वें स्थान पर पहुंच गया है और 2025 तक यह चौथे स्थान पर और वर्ष 2028 तक तीसरे स्थान तक पहुंच सकता है। क्रय शक्ति समता के आधार पर भारत पहले से ही 12 अरब डालर से अधिक की जीडीपी के साथ तीसरे स्थान पर पहुंचा हुआ है।

भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का अर्थशास्त्र

दुनिया में अंतरिक्ष मिशनों की बड़ी लागत रही हैं, लेकिन भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रमों का बजट दुनिया के लिए एक मिसाल है। चंद्रमा मिशन की बात करें तो चंद्रयान–3 का बजट मात्र 615 करोड़ रूपए का ही है। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की खासियत यह है कि इसरो देश की अपनी प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ दुनिया के साथ साझेदारी करता है। जितनी किफायत के साथ भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम संचालित होता है, यह दुनिया को अचंभे में डालने वाला है। दुनिया का एक बड़ा अंतरिक्ष कार्यक्रम चलाने वाले निजी कंपनी एलन मस्क ने भारत की अंतरिक्ष कार्यक्रम की यह कहकर तारीफ की है कि हॉलीवुड की एक विज्ञान फिल्म इंटरस्टेलर की लागत 165 मिलियन अमरीकी डालर थी, जिसकी तुलना में भारत के चंद्रयान–3 मिशन की लागत मात्र 75 मिलियन अमरीकी डालर ही है।

गौरतलब है कि अमरीका का पहले चरण का चंद्रमा मिशन, जिसे अपोलो कार्यक्रमों के रूप में जाना जाता है और जो 1961 से 1972 के बीच में चला उस पर वर्ष 1973 के 25.8 अरब अमरीकी डालर खर्च हुए, जो 2021 के 164 अरब डालरों के बराबर था। अमरीका के प्रत्येक अपोलो मिशन पर 1973 के 300 से 450 मिलियन अरब डालर खर्च हुए। ❑❑

चंद्रयान–3 के वैज्ञानिक और आर्थिक पहलू

भारत अंतरिक्ष अन्वेषण क्षेत्र में वर्ष 1969 से कार्यरत है। विक्रम साराभाई द्वारा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना की गई। भारत ने चाँद पर खोजबीन करने के लिए पहले भी कई बार प्रयास किये हैं। भारत ने चंद्रमा पर तीन मिशन भेजे हैं। 2008 में, भारत द्वारा "चंद्रयान–1" नामक अंतरिक्ष यान चंद्रमा की परिक्रमा करने वाला पहला भारतीय अंतरिक्ष यान बना। 2019 में, भारत ने "चंद्रयान–2" अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर उतारा, जो चंद्रमा पर उतरने वाला दूसरा भारतीय अंतरिक्ष यान बना। 23 अगस्त 2023 को भारत ने "चंद्रयान–3" अंतरिक्ष यान चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारा, जो चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने वाला दुनिया का पहला अंतरिक्ष यान बना। यह कीर्तिमान कार्य भारत के अंतरिक्ष अभियान का स्वर्णिम दिन कहलायेगा। भारत के वैज्ञानिकों ने 'जय विज्ञान' के संकल्प को पूरा किया है, जो आने वाले समय में भारत की वैज्ञानिक और आर्थिक प्रगति को एक समृद्धिशील राष्ट्र बनाने में सहायक होगा।

रुस, अमेरिका, चीन जापान तथा अन्य देशों ने भी समय–समय पर अपने मिशन भेजे हैं, परंतु चन्द्रयान–3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने वाला भारतीय वैज्ञानिकों का सर्वप्रथम सफल मिशन है। इस मिशन से भारत को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में एक अग्रणी देश के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी, और इससे आर्थिक और वैज्ञानिक दोनों तरह से भारत को लाभ होगा।

सोवियत संघ ने चंद्रमा पर सबसे पहले मिशन भेजा था। 1959 में, सोवियत संघ ने "लूना 2" नामक अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर भेजा, जो चंद्रमा पर पहुंचने वाला पहला मानव निर्मित वस्तु बना। 1966 में, सोवियत संघ ने "लूना 9" नामक अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर उतारा, जो चंद्रमा पर उतरने वाला पहला मानव निर्मित यान बना। 1970 में, सोवियत संघ ने "लूना 16" नामक अंतरिक्ष यान चंद्रमा से चट्टान के नमूने लेकर पृथ्वी पर लाया, जो चंद्रमा से नमूने लाने वाला पहला मानव निर्मित यान बना।

रुस, अमेरिका, चीन जापान तथा अन्य देशों ने भी समय–समय पर अपने मिशन भेजे हैं, परंतु चन्द्रयान–3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने वाला भारतीय वैज्ञानिकों का सर्वप्रथम सफल मिशन है।

– डॉ. धनपत राम अग्रवाल

संयुक्त राज्य अमेरिका ने चंद्रमा पर सबसे अधिक मिशन भेजे हैं। 1969 में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने "अपोलो 11" नामक मिशन के तहत मानव को चंद्रमा पर उतारा, जो चंद्रमा पर कदम रखने वाला पहला मानव बना। 1972 तक, संयुक्त राज्य अमेरिका ने "अपोलो 17" नामक मिशन के तहत कुल 12 लोगों को चंद्रमा पर उतारा। 1972 में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने "अपोलो 17" नामक मिशन के तहत चंद्रमा से सबसे अधिक चट्टान के नमूने (382 किलोग्राम) लेकर पृथ्वी पर लाए।

चन्द्रयान–3 के आर्थिक पहलू

चंद्रयान–3 का आर्थिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण होगा। इस मिशन से भारत के अंतरिक्ष उद्योग को बढ़ावा मिलेगा, और इससे नए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। इसके अलावा, इस मिशन से प्राप्त जानकारी और प्रौद्योगिकी का उपयोग अन्य क्षेत्रों में भी किया जा सकता है, जैसा कि नई दवाओं और सामग्री के विकास में।

चंद्रमा पर कीमती धातुओं की खोज के लिए कई देशों ने मिशन भेजे हैं। इन मिशनों से चंद्रमा पर कीमती धातुओं की उपस्थिति की पुष्टि भी की गई है। हालांकि, अभी तक इन धातुओं की मात्रा और गुणवत्ता के बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं मिल पाई है।

चंद्रमा पर कीमती धातुओं की खोज का अर्थ है कि भविष्य में चंद्रमा पर खनन उद्योग का विकास हो सकता है। खनन उद्योग से चंद्रमा पर आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, और यह चंद्रमा पर मानव की एक बड़ी उपलब्धि हो सकती है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि चंद्रमा पर पानी, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन, नाइट्रोजन, और सल्फर जैसे रसायनों की उपस्थिति हो सकती है। इन रसायनों का उपयोग भविष्य में चंद्रमा पर मानव गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।

अंतरिक्ष उद्योग एक तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है। 2022 में, अंतरिक्ष उद्योग का मूल्य लगभग 464 अरब डॉलर था, और यह अनुमान है कि यह 2030 तक 1.2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा।

अंतरिक्ष अन्वेषण भी एक उद्योग की भाँति कई तरह के वैज्ञानिक अन्वेषण और उपयोग से संबंधित है। इसमें उपग्रह, अंतरिक्ष यान, रॉकेट, और अन्य अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के निर्माण, लांच, और संचालन से जुड़े सभी व्यवसाय शामिल हैं।

अंतरिक्ष उद्योग एक तेजी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है। 2022 में, अंतरिक्ष उद्योग का मूल्य लगभग 464 अरब डॉलर था, और यह अनुमान है कि यह 2030 तक 1.2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा। अंतरिक्ष उद्योग के विकास के कई कारण हैं, जिनमें शामिल हैं –

प्रौद्योगिकी में प्रगति

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में प्रगति ने अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक किफायती और सुलभ बना दिया है। अंतरिक्ष अन्वेषण से जुड़े नए अवसरों का उदय हुआ है, जैसे कि उपग्रह प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष पर्यटन, और अंतरिक्ष खनन।

विश्व भर में बहुत सी अंतरिक्ष एजेंसियां आर्थिक दृष्टि से कार्यरत हैं क्योंकि संचार एवं सूचना तथा सांख्यिकी प्रोदयोगिकी का इससे सीधा संबंध है। जैसा कि नासा, इसरो, तथा अन्य सभी विकसित राष्ट्रों का अंतरिक्ष अभियान एवं अंतरिक्ष अन्वेषण उन देशों की कंपनियों से सेवा के बदले अच्छी रक़म का सौदा कर सकते हैं।

इसी प्रकार उपग्रह प्रौद्योगिकी कंपनियां उपग्रहों और अन्य अंतरिक्ष उपकरणों का निर्माण और संचालन करती हैं। रॉकेट निर्माण कंपनियां रॉकेटों का निर्माण करती हैं जो अंतरिक्ष यान को अंतरिक्ष में ले जाती हैं।

संचार कंपनियां अंतरिक्ष उपग्रहों का उपयोग करके संचार सेवाएं प्रदान करती हैं। अंतरिक्ष उद्योग वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह नई प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देता है, और यह रोजगार और आर्थिक विकास को उत्पन्न करता है।

भारत में, अंतरिक्ष उद्योग अभी भी एक अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है, और इसे विकसित होने के लिए अधिक समय और निवेश की आवश्यकता है।

हालांकि, भारत में अंतरिक्ष उद्योग में तेजी से विकास हो रहा है। 2022 में, भारत ने 10 नए उपग्रहों को लॉन्च किया, जो पिछले साल की तुलना में दोगुना है। भारत ने चंद्रमा पर एक रोवर भी भेजा, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

अमेरिका और चीन में, अंतरिक्ष उद्योग का हिस्सा कहीं अधिक है। 2022 में, अमेरिका के अंतरिक्ष उद्योग का कुल मूल्य लगभग 450 अरब डॉलर था, जो अमेरिका की जीडीपी का लगभग 1 प्रतिशत था। चीन के अंतरिक्ष उद्योग का कुल मूल्य लगभग 150 अरब डॉलर था, जो चीन की जीडीपी का लगभग 0.2 प्रतिशत था।

चन्द्रयान–3 के वैज्ञानिक पहलू

चंद्रयान–3 के वैज्ञानिक पहलू भी महत्वपूर्ण हैं। इस मिशन से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होगी, जो पृथ्वी के जलवायु परिवर्तन के बारे में समझने में मददगार होगी। इसके अलावा, इस मिशन से चंद्रमा पर जल की उपस्थिति का पता लगाने का प्रयास किया जाएगा, जो

भविष्य के मानव के स्थाई रूप से चंद्रमा पर अन्य अन्वेषण के लिए महत्वपूर्ण होगा। उदाहरण के लिए, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पानी की उपस्थिति का पता लगाने से हमें पृथ्वी पर जल संसाधनों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, चंद्रमा पर जल के उपयोग के तरीके खोजने से हमें पृथ्वी पर जल संरक्षण में मदद मिल सकती है।

यह भारत के अंतरिक्ष उद्योग को बढ़ावा देता है। चंद्रयान–3 के निर्माण और विकास में भारतीय अंतरिक्ष उद्योग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चंद्रयान–3 की सफलता से भारतीय अंतरिक्ष उद्योग को बढ़ावा मिलेगा, और यह भारत के आर्थिक विकास में योगदान देगा। चंद्रयान–3 और अन्य मिशनों ने भौतिकी और सामग्री विज्ञान के क्षेत्र में भी अनुसंधान को बढ़ावा दिया है। इन मिशनों ने अंतरिक्ष वातावरण और चंद्रमा की सतह पर भौतिक प्रक्रियाओं की बेहतर समझ के लिए अनुसंधान की आवश्यकता को बढ़ाया है। इसने नई सामग्री और प्रौद्योगिकियों के विकास को प्रेरित किया है जो अंतरिक्ष के कठोर वातावरण में काम कर सकती हैं। मौसम की जानकारी हमारे कृषि क्षेत्र के लिये तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं से हमारी रक्षा करती हैं। चंद्रयान–3 से विकसित प्रौद्योगिकियों का उपयोग चिकित्सा अनुसंधान और उपचार में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, चंद्रयान–3 ने चंद्रमा की सतह पर पानी के अणुओं की उपस्थिति की पुष्टि की, जो चिकित्सा अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण खोज है। यह पानी का उपयोग दवाओं और चिकित्सा उपकरणों के उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

राष्ट्रीय सुरक्षा में वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग और अंतरिक्ष अभियानः अंतरिक्ष यान और उपग्रहों का उपयोग बाहरी खतरों की पहचान करने के लिए किया जा सकता है। ये उपकरणों का उपयोग अंतरिक्ष में सैन्य गतिविधियों, अंतरिक्ष मलबे, और अन्य सुरक्षा खतरों की निगरानी करने के लिए किया जा सकता है।

अंतरिक्ष अन्वेषण से अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा मिल सकता है। अंतरिक्ष एजेंसियां एक साथ काम कर सकती हैं ताकि सुरक्षा खतरों की पहचान और जवाब देने में मदद मिल सके।

अंतरिक्ष अनुसंधान से नई सुरक्षा प्रौद्योगिकियों और तकनीकों का विकास हो सकता है। इन प्रौद्योगिकियों और तकनीकों का उपयोग अंतरिक्ष में सुरक्षा बलों को अधिक कुशल और प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है।

भारत सरकार अंतरिक्ष अन्वेषण को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखती है। भारत सरकार अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों और तकनीकों का उपयोग सुरक्षा बलों को अधिक कुशल और प्रभावी बनाने के लिए कर रही है।

उदाहरण के लिए, भारत सरकार अंतरिक्ष सेंसर का उपयोग सीमा क्षेत्रों की निगरानी करने के लिए कर रही है। इन सेंसरों का उपयोग घुसपैठियों और अवैध गतिविधियों की पहचान करने के लिए किया जा रहा है। भारत सरकार अंतरिक्ष आधारित संचार प्रौद्योगिकियों का उपयोग सुरक्षा बलों को एक–दूसरे के साथ संवाद करने और समन्वयित करने के लिए भी कर रही है।

भारत सरकार अंतरिक्ष अन्वेषण को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में देखती रहेगी। अंतरिक्ष अन्वेषण से भारत को सुरक्षा खतरों को पहचानने, जवाब देने, और रोकने में मदद मिलेगी। इसरो ने अन्य देशों के उपग्रहों का प्रक्षेपण आरम्भ कर दिया है और सारा विश्व अब भारतीय अंतरिक्ष अन्वेषण तथा तकनीक में भारत के वैज्ञानिकों की मेधा की बहुत प्रशंसात्मक और विश्वसनीयता को मान्यता प्रदान करता है। अब तक 30 से ज़्यादा देशों को इसरो ने सेवा प्रदान की है और हाल ही में एक साथ 104 उपग्रह छोड़े जिसकी सारे विश्व में भूरी–भूरी प्रशंसा हुई। ❑❑

:: सूचना ::

स्वदेशी पत्रिका आर्थिक सम्राज्यवाद के खिलाफ एक सशक्त आवाज है। पत्रिका को ऐसे लोगों से प्रतिक्रियाएं, रिपोर्ट या आलेख की अपेक्षा है जो राष्ट्रहित में सोचते हैं और देश के स्वावलम्बन के लिए कुछ करने की इच्छा रखते है। जरूरी नहीं कि आप पत्रकार या लेखक ही हों, अपने आसपास से जुड़ी चीजों के प्रति आपकी संवदेना है और आप शब्दों में उसे लिख सकते है तो हमें अवश्य लिख भेजें। साथ ही स्वदेशी पत्रिका में छपे लेख आपको कैसे लगते हैं, क्या आप इसमें कुछ नए विषयों का समायोजन चाहते हैं कृपया हमें अवश्य अवगत कराएं। आपके विचारों को हम प्राथमिकता के साथ प्रकाशित करने का भी प्रयास करेंगे।

संपादक, स्वदेशी पत्रिका

'धर्मक्षेत्र', सेक्टर–8, बाबू गेनू मार्ग, रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022

चंद्रयान और अंतरिक्ष अनुसंधान के नये क्षितिज

भारत के चन्द्रयान–3 के चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सुरक्षित उतरना एक विश्व कीर्त्तिमान है। उसके उपरांत सौरयान का प्रक्षेपण और उस यान द्वारा चित्रों का प्रेषण भी एक बड़ी उपलब्धि है। आज भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान क्षेत्र विश्व में सर्वाधिक द्रुत विस्तार के साथ 100 अरब डालर के उद्योग का रूप ले रहा है। चंद्रयान–3 की सफलता के साथ भारत अब अमेरिका, रूस व चीन के बाद चौथी अंतरिक्ष शक्ति के रूप में ही नहीं, चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर लेंड करने वाला पहला देश बन गया है। भारत विश्व में अंतरिक्ष के क्षेत्र में अंतरिक्ष उत्पादों और सेवाओं के निर्माण के लिए लागत दक्षता, उच्च तकनीक कौशल एवं उन्नत तकनीक के आधार पर निर्माण के क्षेत्र में उच्च प्रतिष्ठा के साथ अब स्टार्टअप और बड़े उद्यमों की भागीदारी के साथ उन्हें और अधिक निवेश हेतु अत्यन्त द्रुत गति से प्रेरित करेगा। स्वतंत्र निजी अंतरिक्ष उद्यम भी इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत आज विश्व की सर्वाधिक द्रुत गति से आगे बढ़ रही अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था या स्पेस इकानॉमी है।

वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत का अंश वर्तमान 2.5 प्रतिशत से बढ़कर इस दशक के अंत तक ही 12 प्रतिशत हो जाएगा। मौद्रिक दृष्टि से हमारा 12 अरब डालर का अंतरिक्ष उद्योग बढ़कर 2025 तक 25 अरब डालर व 2030 तक 150 अरब डालर अर्थात 12 लाख करोड़ रूपये के तुल्य हो सकता है। चंद्रयान–3 की सफलता हमारी अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को पंख लगा देगी। परिणामतः वैश्विक अंतरिक्ष उद्योग की औसत 2.5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की तुलना में भारतीय अंतरिक्ष उद्योग 5 प्रतिशत वार्षिक दर से बढ़ रहा है। आगामी वर्षों में अन्य देशों से जो प्रक्षेपण का व्यवसाय प्राप्त होगा, इससे यह दर 7.5 से 10 प्रतिशत तक जा सकती है।

चंद्रयान की सफलता से नयी आर्थिक उछाल

भारतीय चंद्रयान–3 के चंद्रमा पर सफलतापूर्वक लैडिंग के पहले ही इस ऐतिहासिक घटना का असर शेयर बाजार पर दिखने लगा था। जिन कंपनियों की अंतरिक्ष के क्षेत्र में

आगामी दशकों में भारत अंतरिक्ष अनुसंधान एवं विश्व भर के लिए एक प्रक्षेपण हब बनेगा, जो देश में रोजगारी, तकनीकी विकास व आर्थिक संवृद्धि का आधार बनेगा।

– डॉ. जया शर्मा

गतिविधियां हैं उनके शेयरों में अग्रिम उछाल आ गया। लैंडिंग के उपरांत उनके शेयरों में भारी तेजी देखी गई है। आगामी वर्षों में नये स्टार्टअप और उपक्रम इस क्षेत्र में प्रवेश करेंगे, उससे देश में एक नयी आर्थिक उछाल अपेक्षित है। लार्सन और टूब्रो, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स, भारत फोर्ज, लिंडे इंडिया, सेंटम इलेक्ट्रॉनिक्स, अवांटेल, और एलएंडटी टेक्नोलॉजी सर्वे इलेक्ट्रॉनिक कॉम्पोनेंट्स या अंतरिक्ष क्षेत्र में इंजीनियरिंग सर्विसेज और साल्यूशन की आपूर्ति करने के कारोबार में हैं, उन सभी ने शेयर मार्केट में ताज़ा 52 सप्ताह के उच्चतम स्तर को छू लिया। इनसे प्रेरित होकर 50 से अधिक छोटी बड़ी कंपनियाँ इस क्षेत्र में मूल्य संवर्द्धन हेतु आगे आने के लिये पहल कर रही हैं।

चन्द्रयान से विकास को नयी गति

चन्द्रयान की सफलता भारत को कई क्षेत्रों में बढ़त दिलाएगी। देश की ख्याति, तकनीक व अनुसंधान आदि में एक नई गति मिलेगी। यथाः

1. अंतर्राष्ट्रीय ख्याति व सीमा पार से कामः विश्व के कई देश अब भारत से सीमा पार सहयोग के लिए आगे आयेंगे व कई कम्पोनेन्ट आऊटसोर्स करेंगे।

2. प्रौद्योगिकीय का आधुनिकीकरणः चंद्रयान–3 की सफलता से भारतीय उद्योग में नई तकनीकों और प्रौद्योगिकियों के विकास में प्रोत्साहन मिलेगा। यह सूचित करेगा कि भारत स्वयं विकसित और उन्नत तकनीकी समाधानों के लिए सक्षम है, जो उद्योग में नवाचार और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण है।

3. रोजगार के अवसरों में वृद्धिः चंद्रयान–3 की सफलता से नये उद्यमों व स्टार्टअप्स की शुरूआत होगी और नौकरियों के नये स्रोत उत्पन्न होंगे। विदेशों से जो काम मिलेगा, उससे व्यापक रोजगार सृजन होगा।

चंद्रयान–3 की सफलता से भारतीय आंतरिक्ष उद्योग को नई गति मिलेगी। अब यह सिद्ध हो गया है कि भारत विश्व स्तर पर उच्च–तकनीकी आंतरिक्ष मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा करने की क्षमता रखता है। इससे अंतरिक्ष अनुसंधन एक उदीयमान उद्योग का रूप ले सकेगा।

4. विज्ञान मे शिक्षा व शोध को प्रोत्साहनः चंद्रयान–3 की सफलता भारतीय विज्ञान और अंतरिक्ष शिक्षा और वैज्ञानिक शोध और अनुसंधान के लिए प्रेरित करेगी। नयीं पीढ़ी इन विषयों की ओर अनुसंधान के लिये आगे आयेगी।

5. अंतरिक्ष उद्योग का विकासः चंद्रयान–3 की सफलता से भारतीय आंतरिक्ष उद्योग को नई गति मिलेगी। अब यह सिद्ध हो गया है कि भारत विश्व स्तर पर उच्च–तकनीकी आंतरिक्ष मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा करने की क्षमता रखता है। इससे अंतरिक्ष अनुसंधन एक उदीयमान उद्योग का रूप ले सकेगा।

6. समग्र आर्थिक विकास को गतिः चंद्रयान–3 की सफलता से भारतीय उद्योग में निवेश बढ़ने से आर्थिक विकास दर पर भी सकारात्मक प्रभाव होगा। इससे इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग, डिजाइन उद्योग आदि तेजी से बढ़ेंगे।

अंतरिक्ष नीति 2023 देगी नया सम्बल

नवीन अंतरिक्ष नीति–2023 अंतरिक्ष अनुसंधान को नवीन आयाम देगी। नवीन अंतरिक्ष नीति में निजी क्षेत्र को भी बड़ी भूमिका प्रदान की गई है। इससे पूर्व भी तेजी से बढ़ रहे अंतरिक्ष विज्ञान स्टार्टअप्स भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान उद्योग में द्रुत बढ़ावा देते रहे हैं। नई भारतीय अंतरिक्ष नीति–2023 में गैर–सरकारी संस्थाओं (नॉन गवर्नमेंट एण्टाइटीज) या निजी कंपनियों या स्टार्टअप को देश में और देश से बाहर रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट सिस्टम स्थापित करने और उन्हें संचालित करने की छूट दी गई है। अब निजी कंपनियां और स्टार्टअप दोनों ही अपने स्वामित्व वाली और बाहर से खरीदे गए या लीज पर लिये गए उपग्रहों को संचालित कर सकेंगे। इस क्षेत्र की उपलब्धियों को देखते हुए, उद्यम पूंजीपति (वेंचर केपिटलिस्ट) भी भारत के अंतरिक्ष–तकनीक क्षेत्र को लाभदायी निवेश के लिए उत्साहित हैं। इससे देश में निवेश के नये आयाम विकसित होंगे।

भारत में निजी क्षेत्र में विकसित रॉकेट लॉन्च करने की भी परम्परा स्थापित हो रही है। घरेलू एयरोस्पेस कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस इस दिशा में पहल भी कर चुकी है। ऐसे ही अंतरिक्ष विज्ञान आगे बढ़ रहे उद्यमियों की नई पीढ़ी भारत को निजी अंतरिक्ष–तकनीक पारिस्थितिकी तंत्र में नये अवसर प्रदान कर रही है। वर्तमान में, देश में 140 से अधिक पंजीकृत अंतरिक्ष–तकनीकी स्टार्टअप हैं, जिनमें स्काईरूट, सैटश्योर, ध्रुव स्पेस और बेलाट्रिक्स जैसे कई स्टार्टअप शामिल हैं, जो उपग्रह–आधारित फोन सिग्नल, ब्रॉडबैंड, ओटीटी और से लेकर वास्तविक दुनिया की उपयोगिता वाली तकनीक बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। 5–जी से लेकर सौर फार्मों का संचालन और भी कई क्षेत्रों में अनुसंधान, संघटक विकास व उत्पादन के क्षेत्र में सक्रिय है। इसके अतिरिक्त धातु विज्ञान से सेंसर विकास तक अनेक नये क्षेत्र विकसित होंगे।

अंतरिक्ष विज्ञान के बाजार के बढ़ते पैमाने, व आकार और 2022 में इस वर्ष की उपलब्धियों में एक निजी रॉकेट लांच और कई अन्य उपग्रह लांच शामिल थे।

अब चंद्रयान–3 की सफलता अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उच्च निवेश को आकर्षित करेगा और अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिलेगा।

संयुक्त भागीदारीयुक्त वैश्विक केन्द्र की पहल

भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 से अब अंतरिक्ष उद्योग में निजी भागीदारी से 2023 में भारतीय अंतरिक्ष–तकनीक पारिस्थितिकी तंत्र को बड़ा बढ़ावा मिलेगा। इस हेतु ''भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र'' और ''इन एण्ड स्पेस–ई'' जैसी पहल पहले ही हो चुकी है। यह लागत–कुशल और अत्यधिक विश्वसनीय अंतरिक्ष–ग्रेड हार्डवेयर विकास, प्ररचना व उत्पादन को बढ़ावा देगा। यह हमारे उद्योग को अन्य देशों के चंद्र कार्यक्रमों सहित सभी प्रकार के अंतरिक्ष अभियान की आपूर्तिकर्ता बनने के लिए भी अवसर प्रदान करेगा। गूगल जैसी कई अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां पहले से ही भारत के अंतरिक्ष–तकनीक स्टार्टअप में व्यापक निवेश कर रही हैं। चंद्रयान–3 के मिशन की सफलता के बाद भारतीय साज सामानों की माँग बढ़ेगी और विदेशी कंपनियों द्वारा भारत से आदायों की सोर्सिंग की जाएगी।

स्टार्टअप्स एवं संयुक्त क्षेत्र से नयी गति

चंद्रयान–3 मिशन ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप्स के लिए कई नवीन व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराये हैं। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत की बढ़ती साख भविष्य में संयुक्त उद्यमों को आकर्षित कर सकती है और भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप्स को दुनिया के लिए अंतरिक्ष प्रणालियों और उप प्रणालियों के डिजाइन और निर्माण भागीदार बनाएगी। हाल ही में इसरो और अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के बीच आर्टेमिस समझौते पर

चंद्रयान–3 मिशन ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप्स के लिए कई नवीन व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराये हैं। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत की बढ़ती साख भविष्य में संयुक्त उद्यमों को आकर्षित कर सकती है

हस्ताक्षर हो चुके हैं। नये समझौतों पर और भी बातचीत चल रही है।

नई नीति निजी कंपनियों को अपनी अंतरिक्ष संपत्ति स्थापित करने की व्यापक स्वतंत्रता देती है। अब ''नॉन गवर्नमेंटल एंटिटीज को अंतरिक्ष वस्तुओं, जमीन–आधारित संपत्तियों को स्थापित कर सकते हैं और संबंधित सेवाओं जैसे संचार, रिमोट सेंसिंग, नेविगेशन इत्यादि की स्थापना और संचालन के माध्यम से अंतरिक्ष क्षेत्र में एंड–टू–एंड गतिविधियां करने की अनुमति सरकार द्वारा दी जाएगी।

भविष्यदर्शी रणनीति और वाणिज्यिक पहल

नई नीति में कई प्रकार की नई सेवाओं को अनुमोदन दिया गया है। नई नीति के अनुसार उपग्रहों के एक समूह के माध्यम से अंतरिक्ष–आधारित ब्रॉडबैंड सेवाएं प्रदान करने पर, ''एनजीई स्व–स्वामित्व या खरीदे गए या जीएसओ/एनजीएसओ संचार उपग्रहों के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष–आधारित संचार सेवाओं प्रस्तुत की जा सकती हैं।'' नई नीति ने इसरो के अंतरिक्ष नियामक प्राधिकृति ''इन एण्ड स्पेस–ई'' और उसकी वाणिज्यिक शाखा ''न्यू स्पेस इण्डिया लिमिटेड'' को भी नई भूमिकाएँ देकर उन्हें विस्तार देने के साथ और भी स्पष्ट रूप से परिभाषित किया है। नई नीति में विभाग की वाणिज्यिक कम्पनी ''न्यू स्पेस इण्डिया लिमिटेड'' के बारे में स्पष्ट किया गया है कि यह सार्वजनिक व्यय के माध्यम से बनाई गई अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों और प्लेटफार्मों के व्यावसायीकरण का कार्य करेगी।

वैश्विक शक्ति की ओर कदम

भारत अपनी लागत कुशलता, तकनीकी उत्कृष्टता, प्रक्षेपण सेवाओं की विश्वसनीयता से अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी शक्ति बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इससे देश को भारी विदेशी मुद्रा भी प्राप्त हो सकेगी और देश में अंतरिक्ष विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, मेकाट्रोनिक्स रिमोट सेंसिग आदि अनेक क्षेत्रों में रोजगार सृजन हो सकेगा। आगामी दशकों में भारत अंतरिक्ष अनुसंधान एवं विश्व भर के लिए एक प्रक्षेपण हब बनेगा, जो देश में रोजगारी, तकनीकी विकास व आर्थिक संवृद्धि का आधार बनेगा। ❑❑

अंतरिक्ष विज्ञान के विकास में पूंजी निवेश की दरकार

पिछले 61 साल से चल रहे अंतरिक्ष कार्यक्रम के जरिए पहले हमने चांद पर पानी खोजा अब चांद के दूसरे सिरे पर भी पहुंचने में कामयाब हुए हैं। इसरो की पूरी टीम ने चांद पर सफल और सॉफ्ट लैंडिंग कर इतिहास रच दिया है। हम अक्सर इस बात पर फूले नहीं समाते कि हमारे वैज्ञानिक कितने कम खर्चे में बहुत शानदार काम कर रहे हैं। इस बार भी अनेक प्लेटफार्म पर यह बात जोर–जोर से फैलाई जा रही है कि चंद्रयान–3 को चांद पर पहुंचने की लागत (615 करोड रुपए) भारत में बनी निर्माता निर्देशक भूषण कुमार और ओम रावत की फिल्म 'आदि पुरुष' के बजट (700 करोड रुपए) से भी कम है। लेकिन ऐसी लाइन चलाने वाले लोगों को ठहर कर सोचना चाहिए कि कम खर्चे में काम चलाने की मजबूरी हमारे वैज्ञानिकों की संभावना को किस तरह प्रभावित कर रही होगी। ज्ञात हो कि वर्ष 2023–24 मेंअंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए आवंटित बजट 12544 करोड रुपए है जो पिछले साल यानी 2022–23 के मुकाबले 8 प्रतिशत कम है।

मालूम हो कि इसरो की कमाई का मुख्य जरिया इसके सैटेलाइट लांचर्स है। जुलाई 23 तक इसरो ने 36 देश के 431 सैटेलाइट लॉन्च किये है। जुलाई 22 तक विदेशी सैटेलाइट लॉन्चिग से इसरो को कुल 22.3 करोड डॉलर की कमाई हुई है। वह भी तब, जब भारत रॉकेट लॉन्च करने की क्षमता से लैस टॉप 10 देशों में शामिल है।

चंद्रयान 3 के शानदार कामयाबी का पहला चरण सभी के लिए गर्व करने के पल हैं, अगर सरकार दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ शोध और अनुसंधान के लिए माकुल बजट का इंतजाम करें तो भारतीय मेधा की दक्षता और कार्य कुशलता से निश्चित रूप से भारतीयों के लिए गर्व के अनेकों पल आगे भी सृजित हो सकते हैं।

–अनिल तिवारी

वर्तमान में वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी मात्र दो प्रतिशत है।अनुमान है कि 2025 तक भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था 13 अरब डॉलर का आंकड़ा छू सकती है। वही सरकार का लक्ष्य है की 2030 तक बाजार के 9 प्रतिशत हिस्से पर भारत का प्रभुत्व हो। दुनिया के अंतरिक्ष बाजार पर नजर रखने वाली एजेंसियों की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2040 तक भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था के 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने की क्षमता और संभावना आंकी जा रही है। ऐसे में इसरो को खुलकर अपनी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने तथा उन परियोजनाओं के लिए सरकार को अपने खजाने से अपेक्षित धनराशि बिना हीला हवाली के मुहैया कराने की जरूरत है।

ज्ञात हो कि सरकारी थिंक टैंक नीति आयोग और इंस्टीट्यूट फॉर कंपीटिटिवनेस की ओर से हाल ही में कराए गए एक अध्ययन से यह खुलासा हुआ है कि भारत अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) पर दुनिया में सबसे कम खर्च करने वाले देशों में शामिल है। देश में अनुसंधान विकास पर 2008 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 0.8 प्रतिशत की तुलना में 2017–18 में इनमें निवेश घटकर 0.7 प्रतिशत रह गया था। हालांकि 2018–19 में इसके बजट में थोड़ी वृद्धि हुई लेकिन बाद के करोना काल में यह उत्तरोत्तर कम ही होता गया। मौजूदा वित्त वर्ष में इस क्षेत्र में निवेश पिछले सत्र की तुलना में आठ प्रतिशत कम किए जाने की घोषणा बजट में की गई है।

अद्भुत संजोग है की इसरो का चंद्रयान जब चांद के साउथ पोल पर शाफ्ट लैंडिंग कर रहा था ठीक उसी वक्त दक्षिण अफ्रीका में आयोजित ब्रिक्स की बैठक में प्रधानमंत्री गर्व के साथ सदस्य देशों से इसरो का संदेश 'भारत, मैं अपने गंतव्य पर पहुंच गया हूं और आप भी" साझा कर रहे थे। आंकड़े बताते हैं कि अंतरिक्ष कार्यक्रम के मामले में भारत ब्रिक्स देशों

की तुलना में भी बहुत कम खर्च करता है। ब्राज़ील जीडीपी का करीब 1.2 प्रतिशत रूस 1.1 प्रतिशत चीन दो प्रतिशत से अधिक जबकि दक्षिण अफ्रीका 0.8 प्रतिशत पर खर्च करता है। अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर दुनिया का औसत खर्च करीब 1.8 प्रतिशत है।

अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए खर्च की जाने वाली रकम अपेक्षा से बहुत कम है। इसकी राशि बढ़ाई जाने की जरूरत है। सरकार द्वारा वित्तीय सहायता बढ़ाए जाने के साथ–साथ निजी क्षेत्र को भी इस काम में आगे बढ़कर हाथ बंटाना चाहिए। धन के आवंटन का स्तर और उसकी प्राथमिकता महत्वपूर्ण है। अनुसंधान कार्यक्रमों को अनवरत चलाने के लिए भारतीय विश्वविद्यालय को लंबे समय तक के लिए समुचित धन की व्यवस्था करनी चाहिए। शोध अनुसंधान कार्यक्रम चलाने वाले अंतर विश्वविद्यालयों को भी इसी तरह बढ़ाकर राशि दिए जाने की जरूरत है। नवाचार और संवर्धन ऐसे कारक हैं जिसे किसी भी कीमत पर कमतर नहीं आंकना चाहिए। इसरो के साथ–साथ अकादमिक संस्थानों, शोध प्रयोगशालाओं और अन्य तरह के प्रतिष्ठानों को अभी और लंबी दूरी तय करनी है, जहां उसे अपने अर्जित ज्ञान को कुछ संसाधन के रूप में रचना है तो कुछ नए उपक्रमों का पोषण संवर्धन भी करना है। इनमें से अधिकांश अर्थव्यवस्था को संपन्न करेंगे और उसका चेहरा बदलने वाले होंगे। सुखद है कि भारत में आयातित नवाचार और संवर्धन की जगह अब स्वदेशी तकनीक पर अब ज्यादा भरोसा किया जा रहा है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचना भारत के लिए गौरव की बात तो है ही भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी सुखद संकेत है।अंतरिक्ष संबंधी प्रयासों से रोजमर्रा की जिंदगी में मिलने वाले फायदे दुनिया देख चुकी है। स्वच्छ पेयजल तक पहुंच, विश्व भर में इंटरनेट का प्रसार, सौर ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि, स्वास्थ्य से जुड़ी अनेक प्रौद्योगिकियों का लाभ मानवता को मिल रहा है। चंद्रयान 3 से प्राप्त होने वाले आंकड़ों और जानकारी की ओर दुनिया के वैज्ञानिक, शोधार्थी टकटकी लगाए हुए हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता डेविड ग्रास ने कहा था कि 'भारत के पास वैज्ञानिक शक्ति बनने की क्षमता मौजूद है'। कोविड–19 के लिए देसी वैक्सीन का विकास कर भारत ने अपनी क्षमता को साबित भी कर दिया। ग्रास का कथन पहले से कहीं अधिक आज सच होने की स्थिति में है। आज का भारत एक ऐसी बेहतर और मधुर स्थिति में बैठा है जहां भू राजनीतिक रूझानों से भारत को लाभ मिल सकता है, क्योंकि अब आपूर्ति श्रृंखलाएं चीन से दूर होती जा रही है। इसके साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, अक्षय ऊर्जा जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों के रूप में वैज्ञानिक रुझान भी तीव्र गति से परिपक्व होने लगे हैं। विज्ञानआज ऐसे चरण में है जहां एक क्षेत्र में होने वाली प्रगति दूसरे क्षेत्र को भी आगे बढ़ाने के लिए प्रेरणा देती है। प्रोटीन का अध्ययन करने के लिए गूगल द्वारा विकसित अल्फा फोल्ड एआई मॉडल को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। केवल एक साल की अवधि में ही अल्फा फोल्ड ने विज्ञान को ज्ञात सभी प्रोटीन की संरचनाओं की भविष्यवाणी कर दी है। और अब यह जैव तकनीकी अनुसंधानकर्ताओं के लिए अनिवार्य उपकरण बन गया है। विज्ञान के मोर्चे पर इस तरह की उथल–पुथल मचा देने वाली खोज अब तेज और आम होने लगी है। अब भारत को अपनी वैज्ञानिक महत्वाकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए पीढ़ीगत अनुकूल माहौल का लाभ उठाना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि भारत को अनुसंधान एवं विकास पर अपने खर्च को बढ़ाना चाहिए। अमेरिका और चीन जैसे देशों में विज्ञान पर 80 प्रतिशत से अधिक खर्च निजी क्षेत्र की ओर से किया जाता है। भारत में निजी क्षेत्र का अनुसंधान में योगदान मात्र 35 प्रतिशत के आसपास है।

बहरहाल कमजोर सरोकार के बावजूद भारत में विज्ञान मजबूत दरकार बन कर उभर रहा है। हालांकि सफल वैज्ञानिक प्रगति के लिए पूजा पाठ के टोटके अभी भी कुछ शिराओं में दौड़ रहे हैं, लेकिन आओ विज्ञान करके देखें की राह आसान हुई है। विज्ञान पर बात पहले विज्ञान के खतरे के बहस से शुरू होती थी, लेकिन अब समय बदल गया है। आज का दौर विकास का दौर है, और विकास की आकांक्षा को पूरा करने का सबसे बड़ा औजार है विज्ञान। अपने देश में वैज्ञानिक अध्ययन की एक परंपरा तो रही है पर परंपरा का यह बहाव वर्तमान तक आते–आते लगभग छिड़ हो गया है। नए अनुसंधान और विकास के क्रम में हर जगह बजट की कमी हमारी स्थिति की दरिद्रता को जाहिर करता है। यह ठीक है कि इसरो के साथ–साथ पिछले दो–तीन दशकों में विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय प्रतिभाओं ने कई बड़े मुकाम हासिल किए हैं।इससे देश में एक नई तरह का प्रगाढ़ अर्थतंत्र भी विकसित हुआ है, पर इस कामयाबी के बावजूद देश में विज्ञान शिक्षण और अनुसंधान की ढांचागत चुनौती बरकरार है।हमें मेक इन इंडिया के साथ–साथ भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कार को और अधिक प्राथमिकता देने की जरूरत है। चंद्रयान 3 के शानदार कामयाबी का पहला चरण सभी के लिए गर्व करने के पल हैं, अगर सरकार दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ शोध और अनुसंधान के लिए माकुल बजट का इंतजाम करें तो भारतीय मेधा की दक्षता और कार्य कुशलता से निश्चित रूप से भारतीयों के लिए गर्व के अनेकों पल आगे भी सृजित हो सकते हैं। ❑❑

भारत की अंतरिक्ष में गर्व भरी उड़ान

भारत ने आखिर अपनी जिद पूरी की और अपना यान चाँद पर उतार दिया। जुलाई 2019 की असफलता के बाद कम से कम समय में भारत ने फिर एक बार कोशिश की और सफलता प्राप्त की, यह उल्लेखनीय है। वैसे भारत आकाश और अंतरिक्ष का अभ्यास तो सदियों से करता आया है और चाँद के मानवी जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को भी मानता आ रहा है। चाँद का समुद्र के ज्वार तथा मानवी मन का संबंध तो अब दुनिया भी मान रही है। चाँद को भारत में चंदा मामा के रूप में कौटोंबिक सदस्य भी माना गया है और उसे जीवन व्यवहार में स्थान दिया है, जो कि भारतीय जीवन दृष्टिकोण स्पष्ट करता है। आज दुनिया के साथ भारत भी अंतरिक्ष खोज में शामिल है, जो कि भारत के विकास, आत्मनिर्भरता और समर्थता का एक प्रतीक है।

भारत का अंतरिक्ष अभियान

स्वतंत्रता के बाद से ही भारत ने विज्ञान को स्वीकार कर अपनी नीति बनाई और सर्व दृष्टि से प्रगति की और दुनिया के साथ चलने का प्रयास किया। आकाश और अंतरिक्ष की खोज इसी प्रयास का हिस्सा है। सबसे पहले भारत ने विज्ञान अभ्यास की ओर ध्यान दिया तथा शैक्षणिक संस्थाएँ शुरू की। बाद में आकाश और अंतरिक्ष के अभ्यास हेतु संस्थाओं का निर्माण किया, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) मुख्य है। आज इस संगठन के देश भर में छह प्रमुख केंद्र तथा कई अन्य इकाइयाँ, एजेंसी, सुविधाएँ और प्रयोगशालाएँ स्थापित हैं। भारत का अंतरिक्ष अभियान भारत के प्रधानमंत्री के देखरेख में एक खास विभाग द्वारा किया जाता है। भारत के यही प्रयास आज नया इतिहास लिख रहे हैं।

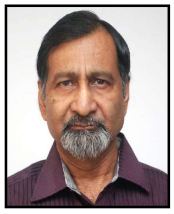

इसरो निकट भविष्य में पृथ्वी की निचली कक्षा में एक मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन की भी योजना बना रहा है जो विभिन्न अत्याधुनिक वैज्ञानिक जांचों के लिए सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण प्रयोगों के अवसर खोलेगा।
–अनिल जवलेकर

संस्था और सुविधा का निर्माण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) जो कि अंतरिक्ष खोज की जिम्मेदारी लिए हुए है, अब अंतरिक्ष में स्वतंत्र पहुंच रखने वाली, स्वदेशी क्षमताओं से विकसित एक कार्यक्षम संस्था बन गई है। भारत की अंतरिक्ष विज्ञान खोज परिज्ञापी रॉकेटों के उपयोग से ऊपरी वायुमंडल के अध्ययन के साथ शुरू हुई और यह गाथा एस्ट्रोसैट, मंगल, चंद्रयान जैसे वैज्ञानिक मिशनों के बाद सौर और अन्य ग्रहीय मिशनों के साथ जारी है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी, ग्रहीय और पृथ्वी विज्ञान, वायुमंडलीय विज्ञान और सैद्धांतिक भौतिकी जैसे वैज्ञानिक गुब्बारों, परिज्ञापी रॉकेट, अंतरिक्ष प्लेटफार्मों और भूमि–आधारित सुविधाओं जैसे कई क्षेत्रों में अनुसंधान शामिल हैं।

प्रक्षेपक का विकास

अंतरिक्ष यान को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए 'प्रक्षेपक या प्रक्षेपण यान का उपयोग किया जाता है। पहला रॉकेट, नैकी–अपाची, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से प्राप्त किया गया था, जिसे 21 नवंबर, 1963 को प्रमोचित किया गया था। उसके बाद भारत का स्वदेशी परिज्ञापी रॉकेट, 1967 में प्रमोचित किया गया था। प्रथम 40 किलोग्राम वजन उठाने और आकाश में ले जाने वाले छोटे वाहनों का निर्माण भारत ने 1970 से शुरू किया, जो 1979 की

एसएलवी प्रयोग के असफलता को झेलते हुए 1980 में सफल हुआ। अब भारत के पास तीन सक्रिय परिचालन प्रक्षेपण यान हैं: ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी), जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट प्रक्षेपण यान (जीएसएलवी), जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट प्रक्षेपण यान एमके–3 (एलवीएम 3)। पीएसएलवी, एक बहुमुखी रॉकेट है, जो उपग्रहों को कक्षाओं में प्रक्षेपित करने में सक्षम है। इसरो द्वारा अपने भू–तुल्यकाली उपग्रह प्रमोचक रॉकेट (जीएसएलवी) और एलवीएम–3 के संचालन और लघु उपग्रह प्रमोचक रॉकेट (एसएसएलवी) के निर्माण के साथ, वांछित रॉकेट पर प्रमोचन के रूप में, एनसिल अपनी प्रमोचन सेवाएं प्रस्तुत करने और विस्तार करने की स्थिति में है। मांग आधारित आधार पर छोटे उपग्रह प्रक्षेपण बाजार को पूरा करने के लिए लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएसएलवी) को पूर्ण स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के साथ विकसित किया जा रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इसरो आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

उपग्रह की उड़ान

उपग्रहों की बात की जाए तो उपग्रहों को मोटे तौर पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है, संचार उपग्रह और सुदूर संवेदन उपग्रह। संचार उपग्रह, आमतौर पर संचार, दूरदर्शन प्रसारण, मौसम–विज्ञान, आपदा चेतावनी आदि की ज़रूरतों के लिए भू–तुल्यकाली कक्षा में कार्य करते हैं। सुदूर संवेदन उपग्रह प्राकृतिक संसाधन निगरानी और प्रबंधन के लिए अभिप्रेत है और यह सूर्य– तुल्यकाली ध्रुवीय कक्षा (एसएसपीओ) से परिचालित होता है। वर्ष 1963 में, पहला परिज्ञापी रॉकेट तिरुवनंतपुरम् के पास थुम्बा भूमध्यरेखीय रॉकेट प्रमोचन स्टेशन (टर्ल्स) से प्रक्षेपित किया गया था। इसके बाद, ध्वनि रॉकेट के माध्यम से रॉकेट–वाहित उपकरणों का उपयोग करके ऊपरी वायुमंडलीय क्षेत्र से कई जांच की गई। आकाश की ओर पहला भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट 1975 में भेजा गया था। उसके बाद भास्कर, रोहिणी, इन्सैट, आईआरएस और ऐसे कई उपग्रह सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किए गए।

अन्य देश भी लाभान्वित

गौरवान्वित करने वाली बात यह है कि इसरो के ध्रुवीय उपग्रह रॉकेट (पीएसएलवी) द्वारा 1999 से ग्राहक उपग्रहों के लिए प्रमोचन सेवाएं प्रदान कर रहा है। जून 2019 तक, 33 देशों के 319 ग्राहक उपग्रहों को वाणिज्यिक आधार पर पीएसएलवी पर अपनी वाणिज्यिक शाखा के माध्यम से प्रमोचित किया गया है। भारत अब इस सुविधा से पैसा भी कमा रहा है। 2018–22 के पाँच वर्षो के बीच भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आईएसआरओ) ने 19 देशों के लिए 177 उपग्रह छोड़कर 1100 करोड़ रुपए कमाए है।

सेवाओं का उपयोग

भारत ने अब इस क्षेत्र में सभी दृष्टि से अपनी क्षमता बढ़ाई है और उपग्रह द्वारा सभी प्रकार का डाटा हासिल कर कई समस्याओं को सुलझाने की कोशिश में है। वाणिज्यिक संचार उपग्रह–समूह भारत संचार प्रेषानुकरों के साथ काम कर रहा है। ये प्रेषानुकर टेलीविजन, दूरसंचार, रेडियो नेटवर्किंग, सामरिक संचार और सामाजिक अनुप्रयोगों जैसी सेवाओं में योगदान देते है। बीएसएनएल, दूरदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो, रणनीतिक सरकारी उपयोगकर्ता, सार्वजनिक क्षेत्र की ईकाईयां, निजी वीएसएटी ऑपरेटर, डीटीएच और टीवी ऑपरेटर, बैंकिंग और वित्तीय संस्थान आदि इन प्रेषानुकरों के प्रमुख उपयोगकर्ता हैं। वर्तमान में, मौसम संबंधी उपग्रह मौसम पूर्वानुमान सेवाओं में सहायता कर रहे हैं। भारत उपग्रह प्रणाली के माध्यम से विपदा चेतावनी और अवस्थिति स्थान सेवा का लाभ उठा रहा है। गगन के कार्यान्वयन से विमानन क्षेत्र को ईंधन की बचत, उपकरण लागत में बचत, उड़ान सुरक्षा, वर्धित वायु अंतरिक्ष क्षमता, दक्षता, विश्वसनीयता में वृद्धि, ऑपरेटरों के कार्यभार में कमी, हवाई यातायात नियंत्रण के लिए समुद्री क्षेत्र के कवरेज के मामले में कई लाभ पहुंचे हैं। राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र सक्रिय रूप से बाढ़, चक्रवात, भूस्खलन, भूकंप और जंगल की आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी में लगा हुआ है। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा उपग्रह सुदूर संवेदन डेटा का उपयोग करके महत्वपूर्ण कृषि फसलों का उत्पादन पूर्वानुमान लगाया जा रहा है। इसलिए यह कहा जा सकता है की भारत सभी क्षेत्रों में उपग्रह से मिलने वाले डाटा से लाभ उठा रहा है।

गर्व की उड़ान

आज तक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय भागीदारी के साथ भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा 3500 से अधिक परिज्ञापी रॉकेट सफलतापूर्वक प्रमोचित किए गए हैं। वर्तमान में परिज्ञापी रॉकेट की कई किस्में विभिन्न पेलोड क्षमता और एपोजी रेंज के साथ कार्यशील हैं। अंतरिक्ष कार्यक्रम के दूसरे स्तर के विकास के दौरान किए गए अंतरिक्ष विज्ञान और अन्वेषण मिशन जैसे कि चंद्रयान, मंगल मिशन, एस्ट्रोसैट मिशनों ने मूल्यवान वैज्ञानिक डेटा प्रदान करना जारी रखा है और ब्रह्मांड के संबंध में मूलभूत वैश्विक ज्ञान में योगदान दे रहे हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आईएसआरओ) निकट भविष्य में पृथ्वी की निचली कक्षा में एक मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन की भी योजना बना रहा है जो विभिन्न अत्याधुनिक वैज्ञानिक जांचों के लिए सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण प्रयोगों के अवसर खोलेगा। इसलिए यह कहा जा सकता है की भारत की अंतरिक्ष की ओर उड़ान गर्व भरी है। ❑❑

चंद्रयान-3 से हासिल होगा अनुसंधान एवं विकास और ग्रामीण विकास का दोहरा लक्ष्य

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रमा के अब तक अज्ञात रहे दक्षिणी ध्रुव पर विक्रम लैंडर को सुरक्षित उतार कर इतिहास रच दिया है। भारत के इस कारनामे से दुनिया को हमारी बढ़ती प्रौद्योगिकी क्षमताओं का अंदाज़ा तो मिला ही है, अनुसंधान एवं विकास की बढ़ती रफ्तार के रास्ते ग्रामीण विकास के लक्ष्य को हासिल करने का दरवाजा भी खुला है।

भारत ने बीते 23 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान–3 के विक्रम लैंडर की सॉफ्ट लैंडिंग कर इतिहास रच दिया था।भारत चंद्रमा की सतह पर पहुंचने वाला दुनिया का चौथा देश और इसके दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बन गया है।इस परीक्षण से वैज्ञानिकों को भविष्य के चंद्र मिशन में तो मदद मिलेगी ही जहां से पृथ्वी पर नमूने भेजे जा सकते हैं, इससे भी महत्वपूर्ण यह की इससे उन मानव अभियानों को भी मदद मिल सकती है जिनकी योजना इसरो के वैज्ञानिकों द्वारा बनाई जा रही है।

आमतौर पर की जाने वाली बातचीत में पड़ोसी देश चीन अपनी पराधीनता की अवधि को राष्ट्रीय अपमान की शताब्दी कहकर संबोधित करता है, लेकिन हर भारतीय जनमानस में पराधीनता के अपमान की गाथा सहस्राब्दियों की है। ऐसे में पूरी दुनिया को पीछे छोड़ते हुए भारत ने अपने अनुसंधान एवं विकास पर फोकस करते हुए एक स्वतंत्र देश के रूप में चांद पर जो उपलब्धि हासिल की है यह ऐतिहासिक तो है ही एक राष्ट्र के रूप में वैज्ञानिक रूप से विकसित होते हुए भारत की गाथा भी है।

इसमें कोई दो राय नहीं की अनुसंधान और विकास किसी भी देश की चौतरफा प्रगति के मूल आयाम होते हैं। भारत में भी अनुसंधान और विकास ग्रामीण विकास से गहरे तौर पर जुड़ा हुआ है। मेरी अपनी राय है कि भारत जैसे विशाल देश से गरीबी को मिटाने, बेरोजगारी को दूर करने, भुखमरी पर काबू पाने के लिए भारत को अनुसंधान एवं विकास में एक महाशक्ति के रूप में खड़ा होना होगा। भारत अपनी प्रतिभा और अपनी प्रौद्योगिकी के बल पर राष्ट्र के समक्ष खड़ी चुनौतियों पर सहज जीत हासिल कर सकता है।

भारत आज जिन समस्याओं का सामना कर रहा है उन्हें केवल प्रौद्योगिकी जानकारी प्रणाली और प्रक्रियाओं को संदर्भ मुक्त आयात करके हल नहीं किया जा सकता है।हमें सिलिकॉन वैली, जापान, चीन, स्विट्जरलैंड, जर्मनी और ताइवान के अनुभवों से सीखना चाहिए। हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि हम थोक में सामान आयात नहीं कर सकते हैं। क्योंकि आयातित सामान एक गरीब देश के लिए बेहद मंहगे और कई बार अप्राप्य हैं। हमारे लिए यह गर्व का क्षण है कि इसरो ने बहुत कम खर्चे में जो उपलब्धि हासिल की है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इसरो ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने में जितना खर्च किया है अगर नासा को यही काम करना होता तो कम से कम 50 गुना से अधिक धन खर्च हुआ होता। पूर्व में भी नासा ने ऐसे अभियानों के लिए बहुत सारे धन खर्च किए हैं।

भारतीय अनुसंधान और विकास कम खर्च की बेहतर पद्धति विकसित करने के लिए जाना जाता है। यूपीआई, आधार, वंदे भारत ट्रेन,यह सभी हमारे घरेलू तकनीकी समाधानों के उदाहरण है, जो हमारी परिस्थितियों के अनुकूल भी हैं। यह सभी आविष्कार भारतीय है

हमारे राष्ट्र की आत्मा जो हर चीज को दैवीय वास्तविकता का हिस्सा मानती है पेड़ों, नदियों, पहाड़ों, जानवरों, सांपों और चट्टानों आदि का पूजा करती है। हमारी परंपरा धरती माता की पूजा करती है। समृद्धि और संतुष्टि के इस संश्लेषण का निर्माण ही भारतीयता का मुख्य ध्येय है। मेरे लिए चंद्रयान–3 का यही अर्थ भी है।

– श्रीधर वैंबू

और कम लागत के हैं। भारत में अधिकांश नागरिक आज भी प्रतिदिन 5 डालर कमाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे में हमें कम लागत वाले नवाचारों की बहुत अधिक आवश्यकता है, और यह केवल अनुसंधान एवं विकास में गहन निवेश से ही संभव हो सकता है।

मालूम हो कि भारत के प्रमुख शहर पहले से ही फैले हुए और भरे हुए हैं। अब आगे हम इनको बहुत अधिक ना तो फैला सकते हैं और ना ही इनकी जनसंख्या बढ़ाते रह सकते हैं। दूसरी तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में भी जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में औसतन प्रति वर्ग किलोमीटर में अमेरिका के एक सामान्य उपनगर के बराबर लोग रहते हैं। अगर हम ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को लगातार शहर की ओर ले आते रहे तो भविष्य के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। इसे हम जापान और टोक्यो की स्थिति से समझ सकते हैं। जापान के अधिकांश सुदूर इलाके धीरे–धीरे बढ़कर टोक्यो तक मिल गए हैं। इन सभी इलाकों का सत प्रतिशत शहरीकरण हो गया है। बड़े पैमाने पर हुई शहरीकरण की प्रक्रिया से जापान ने अपनी आत्मा और प्रेरणा खो दी है। भारत की आत्मा गांव में बसती है और हम अपनी आत्मा खोना नहीं चाहते।

अगर समाधान की बात करें तो पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम बार–बार जोर देकर कहा करते थे कि हमारे ग्रामीण क्षेत्रों को विकसित करने में मदद होनी चाहिए ताकि आबादी को पलायन न करना पड़े। उन्होंने अपने दृष्टिकोण को 'पूरा' कहा था यानी ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाएं प्रदान करना। मेरे लिए उस विजन का परिचालनात्मक अर्थ अनुसंधान एवं विकास केदो को ग्रामीण क्षेत्रों तक फैलाना है। अपने अनुभवों से सीख लेते हुए हमें एक मजबूत टीम के साथ इस पर आगे बढ़ना होगा। स्वदेशी जागरण मंच स्वावलंबी भारत अभियान के जरिए इस काम के लिए स्थानीय नेतृत्व को आगे कर मजबूत पहल शुरू कर दी है। आगे बढ़ने का यही सर्वाधिक उचित दृष्टिकोण भी होगा क्योंकि हमारे द्वारा सृजित अनुसंधान एवं विकास के जरिए उत्पन्न होने वाले रोजगार ग्रामीण क्षेत्र की समृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। स्वावलंबी धरातल पर सृजित प्रत्येक नौकरी सीधे तौर पर अर्थव्यवस्था में अन्य रोजगार अवसरों को जन्म देती है, और रोजगार प्राप्त व्यक्ति अपनी आई स्थानीय व्यवस्था में खर्च करते हैं इसलिए यह एक सिलसिला बन जाता है। तेनकाशी में इसका असर देखा जा सकता है। आने वाले दिनों में यह अन्य क्षेत्रों में भी विकसित रूप में दिखाई देने लगेगा।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम अनुसंधान एवं विकास को समर्थन से, अनुसंधान एवं विकास को विनिर्माण से, सॉफ्टवेयर इंजीनियरों को हाउसकीपिंग स्टाफ से अलग नहीं कर सकते। यह अलगाव वह द्वैतवाद होगा जो बड़े पैमाने पर सामाजिक समस्याओं को जन्म देता है। हमारे अनुसंधान एवं विकास से संबंधित लोगों को उस समाज से जुड़ा होना चाहिए जिसमें हम रहते हैं, क्योंकि हमारे समाज में बड़ी संख्या में साथी नागरिक ऐसे हैं जो गरीब हैं। इसलिए "मैं एक छोटे से गांव में रहता हूं। यहां रहने से मुझे हमारे जलस्तर में सुधार के लिए तालाब खोदने जैसे समाधानों के बारे में सोचने में मदद मिली है, ताकि हम अधिक कृषि श्रमिकों को रोजगार दे सके।मेरी बीएमडब्ल्यू वह अर्थ मूवर है जिसे हम तालाब खोदने के लिए खरीदते हैं। मुझे तालाब में तैरकर आनंद लेने का मौका मिलता है। इसलिए यहां पर अर्थमूवर मेरे लिए बीएमडब्ल्यू से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।"

पश्चिमी सभ्यता के पास जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न मानवता के अस्तित्व संबंधित खतरे का कोई समाधान नहीं है। पश्चिमी जीवन शैली में प्रत्येक व्यक्ति के लिए भारी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यदि भारत जैसा देश भी वही जीवन शैली अपनाता हैं और प्रत्येक भारतीय अमेरिकियों जितना ऊर्जा खर्च करने लगता है तो ग्रह को समाप्त होने में देर नहीं लगेगी। बिल गेट्स जैसे लोग प्रौद्योगिकी आधारित त्वरित समाधान का सपना देखते हैं लेकिन उन समाधानों में और भी अधिक ऊर्जा का खर्च शामिल होता है।

ऐसे में हमें भारत में जीवन का एक बेहतर तरीका ईजाद करना होगा जो अनुसंधान एवं विकास से उत्पन्न होने वाली समृद्धि को जीवन के बेहद सरल तरीके के साथ जोड़ती हो।जब हम जल स्तर को बहाल करने के लिए तालाब खोदते हैं, जब हम छाया और ठंडी जलवायु के लिए पेड़ लगाते हैं तो हमें उन तालाबों और हमारे द्वारा बनाए गए जंगलों का आनंद मिलता है। हम अपनी स्वदेशी तकनीक से विकसित अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं पर शांति से काम कर सकते हैं और पृथ्वी नामक ग्रह की भरपूर मदद कर सकते हैं। भारतीयों के लिए समृद्धि का यही अर्थ भी रहा है। इसलिए धरती माता के साथ सद्भाव पूर्ण माहौल में रहने के लिए संतोष की आध्यात्मिक भावना आवश्यक है। हमारे राष्ट्र की आत्मा जो हर चीज को दैवीय वास्तविकता का हिस्सा मानती है पेड़ों, नदियों, पहाड़ों, जानवरों, सांपों और चट्टानों आदि का पूजा करती है। हमारी परंपरा धरती माता की पूजा करती है। समृद्धि और संतुष्टि के इस संश्लेषण का निर्माण ही भारतीयता का मुख्य ध्येय है। मेरे लिए चंद्रयान–3 का यही अर्थ भी है। ❑❑

चंद्रयान–3: वैज्ञानिक पक्ष

भारत ने अन्तरिक्ष में एक और गौरवपूर्ण सफलता प्राप्त की, जब 14 जुलाई 2023 को चंद्रयान–3 का प्रक्षेपण किया गया। इस उपलब्धि के साथ भारत अमेरिका, अविभाजित रूस और चीन के बाद चौथा देश बन जाएगा। इसके बाद लैंडर के 23 अगस्त 2023 को चंद्रयान–3 ने चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर चरण स्पर्श किया। चंद्रयान–3 ने करीब 3.84 लाख किलोमीटर की दूरी तय की है। चंद्रमा का दक्षिण ध्रुव उसके उत्तरी ध्रुव से अधिक बड़ा है। यहां जल उपलब्ध होने के प्रमाण मिले हैं। यह खोज आंतरिक सौर मंडल की स्थितियों का एक अपरिवर्तित ऐतिहासिक रिकॉर्ड प्रदान करेगी। इसके अलावा, इसके निकट के स्थान जो सदैव इसकी छाया में आच्छादित रहते हैं, उनमें जल की उपस्थिति की संभावना हो सकती है। इसके विषय में मूल भूत वैज्ञानिक जानकारी होना भी आवश्यक है जिससे इस उपलब्धि का वास्तविक अर्थों में उत्सव मनाया जा सके।

चंद्रयान–3 ने 23 अगस्त 2023 को भारत का इतिहास रच दिया। चंद्रयान–3 एक भू–राजनीतिक और अंतरिक्षीय सफलता है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले में भारत की सॉफ्ट पावर और तकनीकी शक्ति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाना है। लेकिन असली सफलता भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों की है, जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की और यह सभी क्षेत्रों में विज्ञान का समर्थन करने की याद भी दिलाता है, भले ही वे नई सतहों पर भारतीय ध्वज नहीं फहरा सकें।

चंद्रयान–3 मिशन के तीन उद्देश्यों में से दो पूरे हो गए हैं जबकि तीसरा अभी चल रहा है। चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन और चंद्रमा पर रोवर के घूमने का प्रदर्शन पूरा हो गया है। जबकि तीसरा उद्देश्य, इन–सीटू वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन वर्तमान में चल रहा है।

–विनोद जौहरी

चंद्रयान–3 मिशन का मुख्य चंद्रमा की सतह का अध्ययन करना है। उस अंत तक, इसे सतह के "जमे हुए पानी जैसे संसाधनों के लिए स्थिरता क्षेत्रों" की जांच करने के लिए एक थर्मल जांच के साथ भेजा गया था, साथ ही चंद्र चट्टानों और मिट्टी का अध्ययन करने के लिए स्पेक्ट्रोस्कोप युक्त चंद्र रोवर भी भेजा गया था। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव को एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र माना जाता है और इसने अपने संभावित जल भंडार और गड्ढों के प्रति वैज्ञानिक रुचि आकर्षित की है, जो प्रारंभिक सौर मंडल की संरचना के विवरण प्रदान कर सकते हैं।

चंद्रयान–3 मिशन के तीन उद्देश्यों में से दो पूरे हो गए हैं जबकि तीसरा अभी चल रहा है। चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन और चंद्रमा पर रोवर के घूमने का प्रदर्शन पूरा हो गया है। जबकि तीसरा उद्देश्य, इन–सीटू वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन वर्तमान में चल रहा है।

यहाँ चंद्रमा की सतह पर अब तक प्राप्त अनुसंधानों का संक्षिप्त विवरण निम्न है:

1. चंद्रमा की सतह पर दर्ज किया गया तापमानः 27 अगस्त 2023 को इसरो ने चंद्रमा की सतह पर तापमान भिन्नता का एक ग्राफ जारी किया। अंतरिक्ष एजेंसी के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक भी चंद्रमा पर दर्ज किए गए उच्च तापमान पर आश्चर्य व्यक्त किया है। अंतरिक्ष एजेंसी ने एक अपडेट साझा करते हुए कहा कि चंद्रयान–3 के विक्रम लैंडर पर चंद्रा के सरफेस थर्मोफिजिकल एक्सपेरिमेंट (ChaSTE) पेलोड ने चंद्रमा की सतह के थर्मल व्यवहार को समझने के लिए ध्रुव के चारों ओर चंद्र ऊपरी मिट्टी के तापमान प्रोफ़ाइल को मापा। समाचार एजेंसी पीटीआई से बात करते हुए, इसरो वैज्ञानिक ने कहा, "हम सभी मानते थे कि सतह पर तापमान 20 डिग्री सेंटीग्रेड से 30 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास हो सकता है, लेकिन यह 70 डिग्री सेंटीग्रेड है। यह आश्चर्यजनक रूप से हमारी अपेक्षा से अधिक है।"

2. चंद्रमा की सतह पर 4–मीटर व्यास का क्रेटरः 27 अगस्त 2023 को, चंद्रमा की सतह पर चलते समय, चंद्रयान –3 रोवर को 4–मीटर व्यास वाले क्रेटरके सामने आने पर एक बाधा का सामना करना पड़ा। इसरो के एक अपडेट में कहा गया कि क्रेटरनियत स्थान से 3 मीटर आगे स्थित था। इसके बाद इसरो ने रोवर को अपने पथ पर वापस लौटने का आदेश देने का निर्णय लिया और सूचित किया कि रोवर अब सुरक्षित रूप से एक नए पथ पर आगे बढ़ रहा है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के चंद्रमा लैंडर विक्रम और रोबोटिक रोवर प्रज्ञान को अब सुप्त अवस्था में आने के लिए कहा गया है। इसरो को आशा है कि वे 22 सितंबर को चंद्र सूर्योदय के समय चंद्रयान–3 को फिर से क्रियाशील कर सकेंगे।लेकिन चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के आसपास अपने दो सप्ताह के प्रवास में, उन्होंने ऐसी जानकारी प्रदान की जिससे ग्रह वैज्ञानिक चकित रह गए। यहां कुछ पहली उल्लेखनीय खोजें दी गई हैं।

आयनों और इलेक्ट्रॉनों का एक पतली सतह सूप चंद्र ध्रुव के पास घूमती है। विक्रम लेंडर द्वारा चंद्रमा के आयनमंडल के घनत्व और तापमान का पहला माप किया। इसरो ने दक्षिणी ध्रुव के पास चंद्रमा की सतह पर विद्युत चार्ज प्लाज्मा की 100 किलोमीटर मोटी परत में आयनों और इलेक्ट्रॉनों के "अपेक्षाकृत विरल" मिश्रण की रिपोर्ट दी है। प्लाज्मा के प्रारंभिक माप से प्रति घन मीटर लगभग 5 मिलियन से 30 मिलियन इलेक्ट्रॉनों के घनत्व का संकेत मिलता है। चंद्रयान–3 मिशन के डेटा का विश्लेषण करने वाले इसरो वैज्ञानिक ने बताया कि जैसे–जैसे चंद्र दिवस (लुनर डे) बढ़ता है, घनत्व अलग–अलग होने लगता है। पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल में एक समान परत का चरम घनत्व दस लाख इलेक्ट्रॉन प्रति घन सेंटीमीटर है।

यदि काल्पनिक रूप से मनुष्य का चंद्रमा पर निवास होगा तो आयनमंडल का घनत्व चंद्रमा पर संचार और नेविगेशन प्रणालियों को प्रभावित करेगा – इलेक्ट्रॉन घनत्व जितना अधिक होगा, रेडियो संकेतों को आयनमंडल के माध्यम से यात्रा करने में उतना ही अधिक समय लगेगा। वैज्ञानिक कहते हैं, विरल प्लाज्मा का मतलब है कि संभावित देरी "न्यूनतम" होगी, और ट्रांसमिशन के लिए कोई समस्या पैदा नहीं होगी।

गहराई के साथ तापमान में भिन्नता

चंद्रमा पर मानवीय निवास पर विचार करते समय चंद्रमा की मिट्टी को समझना, उसके तापमान और चालकता सहित, महत्वपूर्ण होगा। लैंडर में 10 सेंसर युक्त तापमान जांच उपकरण लगा हुआ है और यह चंद्रमा की सतह से 10 सेंटीमीटर नीचे तक पहुंचने में सक्षम है। इसके प्रारंभिक आंकड़ों से पता चलता है कि दिन के दौरान, 8 सेमी नीचे का तापमान सतह की तुलना में लगभग 60 डिग्री सेल्सियस कम होता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ कोलोराडो बोल्डर के ग्रह वैज्ञानिक पॉल हेने का कहना है कि चंद्र दिवस के दौरान तापमान में भारी गिरावट की आशा है, क्योंकि गर्मी सूर्य की गर्म सतह से नीचे की ओर प्रवाहित नहीं होती है। "यह उस प्रभाव के समान है जो एक गर्म दिन में समुद्र तट पर जाने पर अनुभव होता है – बस कुछ सेंटीमीटर नीचे खोदें और रेत बहुत ठंडी हो जाती है," वे कहते हैं।वैज्ञानिक हेने कहते हैं, अब तक के मापों से पता चला है कि सतह पर तापमान नासा के 2009 लूनर रिकोनिसेंस ऑर्बिटर द्वारा दर्ज की गई तुलना में काफी अधिक गर्म है। वह कहते हैं, "पानी की बर्फ के स्थिर होने के लिए तापमान बहुत अधिक गर्म है", यह समझाते हुए कि पानी अंतरिक्ष के निर्वात में बहुत कम तापमान पर लगभग (–) 160 डिग्री सेल्सियस पर, ठोस से गैस में परिवर्तित हो जाता है। चंद्रयान–3 के डेटा से पता चलता है कि सैंपल की गई औसत गहराई पर तापमान –10 डिग्री सेल्सियस से अधिक गर्म है।

एक संदिग्ध चंद्रभूकंप (चंद्रमा पर भूकंप)

विक्रम लैंडर के सिस्मोग्राफ द्वारा रेकॉर्ड किए गए कई कंपनों में से, एक ने विशेष रूप से वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा। कैनबरा में ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी में ग्रह भू–रसायनज्ञ मार्क नॉर्मन कहते हैं, "ऐसा लगता है कि उपकरण ने एक बहुत छोटी भूकंपीय घटना को रिकॉर्ड किया है जो लगभग 4 सेकंड में पृष्ठभूमि में चली गई"। इसरो के वैज्ञानिकों को संदेह है कि यह एक छोटा चंद्रभूकंप या छोटे उल्कापिंड का प्रभाव था।चंद्रमा पर ऐसी गड़बड़ी की आशंका है. नॉर्मन कहते हैं, "चंद्रमा पर ज्वारीय बलों से संबंधित छोटे प्रभाव और स्थानीय टेक्टोनिक समायोजन आम हैं, लेकिन हमें वास्तव मंल चंद्रमा पर एक वैश्विक भूकंपीय नेटवर्क और किसी विशेष घटना के महत्व को समझने के लिए दीर्घकालिक अवलोकन की आवश्यकता है।"

गंधक की पुष्टि

इसरो की रिपोर्ट के अनुसार, रोवर द्वारा परीक्षण स्पष्ट रूप से दक्षिणी ध्रुव के पास चंद्र सतह में गंधक (सल्फर) की उपस्थिति की पुष्टि हुई है। इसमें अन्य तत्वों के अलावा एल्यूमीनियम, सिलिकॉन, कैल्शियम और आयरन भी पाए गए।

अभी चंद्रयान–3 की बहुत बड़ी यात्रा प्रतीक्षित है और इसके अनुसंधानों के परिणाम भविष्य की अंतरिक्ष के कार्यक्रमों की दिशा तय करेंगे। ❑❑

चंद्रयान–3 की सफलता

पश्चिमी देशों का चिढ़ना दर्शाता है कि भारत आगे बढ़ रहा है

अंततः भारत चल पड़ा है विश्व गुरु बनने की राह पर। परंतु, पश्चिमी देशों में कुछ विघनसंतोषी जीवों को शायद यह रास नहीं आ रहा है क्योंकि भारत, ब्रिटेन का कभी औपनिवेशिक देश रहा है और इन देशों की नजर में यह कैसे हो सकता है कि ब्रिटेन के चन्द्रमा पर पहुंचने के पूर्व ही उनका एक पूर्व औपनिवेशक देश अपना चन्द्रयान–3 सफलता पूर्वक चन्द्रमा पर उतार ले। भारत, पूरे विश्व में, पहिला देश है जिसने चन्द्रयान–3 को चन्द्रमा के दक्षिणी पोल पर सलतापूर्वक उतार लिया है। अन्यथा, विश्व का कोई भी देश, अमेरिका, रूस एवं चीन सहित, अभी तक चन्द्रमा के दक्षिणी पोल पर अपना यान उतारने में सफल नहीं हो सका हैं। निश्चित ही भारत की यह सफलता न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के समस्त देशों के लिए गर्व का विश्व होना चाहिए। यदि चन्द्रयान–3 अपने उद्देश्यों में सफल हो जाता है जैसे चन्द्रमा पर पानी उपलब्ध है अथवा नहीं, चन्द्रमा पर किस प्रकार के खनिज पदार्थ (सोना, प्लेटिनम, टाइटेनियम, यूरेनियम, आदि), रासायनिक पदार्थ, प्राकृतिक तत्व, मिट्टी एवं अन्य तत्व पाए जाते हैं, आदि का पता लगने पर क्या इस जानकारी का लाभ केवल भारत को ही होने जा रहा है अथवा क्या विश्व के अन्य देश भी इस जानकारी का लाभ उठा सकने की स्थिति में नहीं होंगे। परंतु, पश्चिमी देशों में कुछ तत्व भारत की इस महान उपलब्धि को सकारात्मक दृष्टि से न देखते हुए इस संदर्भ में अपनी नकारात्मक सोच को आगे बढ़ाते हुए दिखाई दे रहे है, और सम्भव है कि भारत के प्रति उनकी यह नकारात्मक सोच इन देशों के लिए भविष्य में हानिकारक सिद्ध हो।

अंतरिक्ष बाजार में भारत की धमक का यह स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहा है और इस क्षेत्र में भारत एक धूमकेतु की तरह बनकर उभरा है। भारतीय इसरो अपने 100 से ज्यादा अंतरिक्ष अभियान, चन्द्रमा मिशन, मंगल मिशन, स्वदेशी अंतरिक्ष शटल, एवं चन्द्रयान–3 सहित, सफलतापूर्वक सम्पन्न कर चुका है।

– प्रहलाद सबनानी

न्यूयॉर्क टाइम्स ने एक कार्टून छापा है जिसमें बताया गया है कि विशिष्ट वर्ग के दो नागरिक एक कक्ष (कैबिन) में बैठे हैं एवं इनमें से एक संभ्रात व्यक्ति एक अखबार में भारत के मंगल मिशन के संबंध में जानकारी पढ़ रहा है। इस कक्ष के बाहर भारतीय गरीब किसान के रूप में एक गाय को लेकर एक व्यक्ति दरवाजे के बाहर खड़ा है, जो दरवाजे पर दस्तक देता हुआ दिखाई दे रहा है। इस कार्टून से ऐसा महसूस कराए जाने का प्रयास किया जाना प्रतीत हो रहा है कि जैसे एक गरीब भारत देश, पश्चिमी देशों से अपने मंगल मिशन के लिए सहायता मांग रहा हो। संभवतः भारत के चन्द्रयान–3 की सफलता को पश्चिमी देशों में कुछ तत्व पचा नहीं पा रहे हैं।

एक ब्रिटिश पत्रकार पेट्रिक क्रिस्टी ने भारत को चन्द्रयान–3 को चन्द्रमा के दक्षिणी पोल पर सफलता पूर्वक उतारे जाने की बधाई देते हुए यह मांग की है कि ब्रिटेन द्वारा भारत को उपलब्ध कराई जा रही आर्थिक सहायता राशि को वापिस लिया जाना चाहिए क्योंकि उसके अनुसार चूंकि भारत की आधी आबादी गरीबी का जीवन जी रही है अतः ब्रिटेन द्वारा भारत को दी जा रही आर्थिक सहायता राशि का उपयोग भारत में गरीबी मिटाने के उद्देश्य से न

किया जाकर अंतरिक्ष में अपने चन्द्रयान भेजने के लिए किया जा रहा है। इस ब्रिटिश पत्रकार का दावा है कि ब्रिटेन द्वारा भारत को वर्ष 2016 से वर्ष 2021 के बीच 230 करोड़ ब्रिटिश पाउंड की राशि आर्थिक सहायता के रूप में उपलब्ध कराई गई है। उक्त पत्रकार का यह भी कहना है कि यदि भारत अपने राकेट को अंतरिक्ष में भेज रहा है तो भारत को ब्रिटेन के पास कटोरा लेकर मदद के लिए नहीं आना चाहिए। जबकि इस संदर्भ में वास्तविकता यह है कि भारत कभी भी ब्रिटेन के पास आर्थिक सहायता मांगने के लिए गया ही नहीं है। इस संदर्भ में ब्रिटेन द्वारा सरकारी तौर पर उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार ब्रिटेन ने भारत को किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं कराई हैं परंतु ब्रिटेन ने वर्ष 2015 के बाद से भारत में व्यवसाय को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निवेश जरूर किया है ताकि भारत के बाजार में ब्रिटेन का योगदान बढ़ सके एवं ब्रिटेन के नागरिकों के लिए रोजगार के अवसर निर्मित हो सकें।

यह भी एक वास्तविकता है कि भारत आज विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और इस संदर्भ में हाल ही में भारत ने ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को पीछे छोड़ते हुए अपनी अर्थव्यवस्था को आकार में ब्रिटेन से भी बड़ी अर्थव्यवस्था बना लिया है। परंतु, कुछ ब्रिटिश राजनीतिज्ञ एवं पत्रकार इस तथ्य को स्वीकार ही नहीं कर पा रहे हैं और वे अपनी साम्राज्यवादी सोच से भी बाहर नहीं आ पा रहे हैं। ऐसे तत्व आज भी भारत को अपनी एक कालोनी (उपनिवेश) के रूप में ही देख रहे हैं और सोच रहे हैं कि भारत कैसे ब्रिटेन से पहिले चन्द्रमा पर पहुंच सकता है। जबकि आज वस्तुस्थिति यह है कि ब्रिटेन की आर्थिक हालत इतनी अधिक खराब हो गई है कि ब्रिटेन के नागरिकों को अपने बिजली के बिल का भुगतान करने के लिए भी ऋण लेना पड़ रहा है।

पश्चिमी देशों को अब यह समझना होगा कि यह 21वीं सदी है एवं वैश्विक पटल पर भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आगे बढ़ चुका है। यह पश्चिमी देशों के हित में ही होगा कि वे भारत की विकास यात्रा में भागीदार बनें एवं अपने आर्थिक हितों को भी बल प्रदान करें, इस बात को जितनी जल्दी समझें उनके लिए उतना ही अच्छा है क्योंकि अन्यथा वे स्वयं के आर्थिक हितों को नुक्सान ही पहुंचा रहे होंगे। क्या ब्रिटेन इस बात को भूल गया है कि औपनिवेशक खंडकाल में उसने भारत पर शासन के दौरान वर्ष 1765 से लेकर वर्ष 1938 तक भारत से 45 लाख करोड़ पाउंड की लूट की है (यह तथ्य एक अधय्यन प्रतिवेदन में सामने आया है), हो सकता है यह राशि और भी अधिक रही हो। परंतु, उक्त राशि भी ब्रिटेन के सकल घरेलू उत्पाद का 15 गुणा है। उक्त राशि को ब्रिटेन द्वारा भारत को लौटाए जाने पर भी विचार किया जाना चाहिए। ब्रिटेन द्वारा भारत में की गई भारी लूट के बावजूद भारत एक बार पुनः अब अपने पैरों पर खड़ा हो चुका है एवं भारत को अपने मिशन चन्द्रमा ग्रह, मिशन मंगल ग्रह एवं मिशन सूर्य ग्रह पर पश्चिमी देशों के दर्शन की आवश्यकता नहीं है।

वैसे भी देखा जाये तो अमेरिका के अंतरिक्ष केंद्र नासा में बड़ी संख्या में भारतीय मूल के इंजीनियर्स कार्यरत हैं जबकि भारत के अंतरिक्ष केंद्र इसरो में सम्भवतः एक भी अमेरिकी इंजीनियर कार्यरत नहीं है। अर्थात, पश्चिमी देशों के अंतरिक्ष से जुड़े विभिन्न मिशनों में भारतीयों का सीधा सीधा योगदान रहता आया है। भारत के इसरो प्रमुख का तो यहां तक कहना है कि आधुनिक विज्ञान की उत्पत्ति वेदों से हुई है, परंतु पश्चिमी देशों ने इसे अपनी खोज की तरह प्रस्तुत किया है। अतः इस संदर्भ में कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अंतरिक्ष से जुड़े पश्चिमी देशों के विभिन्न मिशन अपरोक्ष रूप से भारत के सहयोग से ही चल रहे हैं जबकि इस क्षेत्र में भारत के विभिन्न मिशन अपने बलबूते पर चल रहे हैं। अब पश्चिमी देशों को इस वस्तुस्थिति से अवगत होना बहुत जरूरी है।

वैसे भी अंतरिक्ष के क्षेत्र में हाल ही के समय में भारत का एक तरह से वर्चस्व स्थापित होता दिखाई दे रहा है। आज पूरी दुनिया ही अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत का लोहा मानने लगी है। भारत ने इस क्षेत्र में अमेरिका, रूस एवं चीन जैसे देशों के एकाधिकार को तोड़ा है। भारत आज समूचे विश्व में सैटेलाइट के माध्यम से टेलीविजन प्रसारण, मौसम के सम्बंध में भविष्यवाणी और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है और चूंकि ये सभी सुविधाएं उपग्रहों के माध्यम से ही संचालित होती हैं, अतः संचार उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने की मांग आज समस्त देशों के बीच बढ़ रही है। चूंकि भारतीय तकनीक तुलनात्मक रूप से बहुत सस्ती है अतः कई देश अब इस सम्बंध में भारत की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इन परिस्थितियों के बीच चंद्रयान–3 की कम लागत में सफल लैंडिंग के बाद व्यवसायिक तौर पर भारत के लिए संभावनाएं पहले से अधिक बढ़ गयी है। आज भारतीय इसरो की, कम लागत और सफलता की गारंटी, सबसे बड़ी ताकत बन गयी है। अंतरिक्ष बाजार में भारत की धमक का यह स्पष्ट संकेत दिखाई दे रहा है और इस क्षेत्र में भारत एक धूमकेतु की तरह बनकर उभरा है। भारतीय इसरो अपने 100 से ज्यादा अंतरिक्ष अभियान, चन्द्रमा मिशन, मंगल मिशन, स्वदेशी अंतरिक्ष शटल, एवं चन्द्रयान–3 सहित, सफलतापूर्वक सम्पन्न कर चुका है। ❑❑

बिंदेश्वरी पाठक की कमी खलेगी

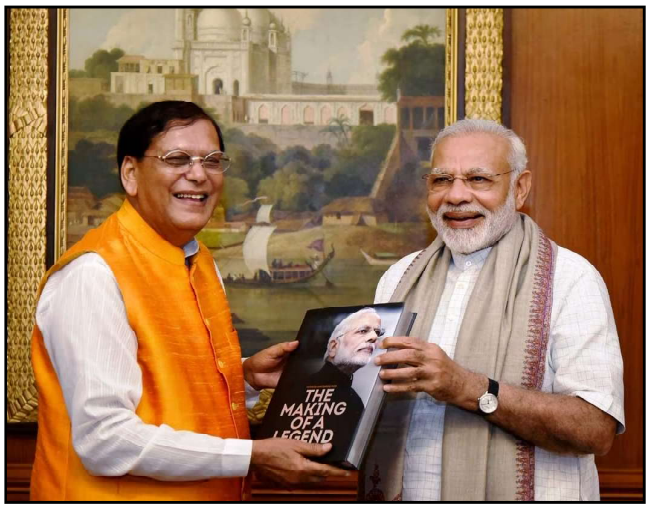

15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के समारोह के बीच, इस खबर को आत्मसात कर पाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था कि बिंदेश्वरी पाठक जी हमारे बीच नहीं रहे। सहज, सरल, विनम्र व्यक्तित्व के धनी, सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक बिंदेश्वरी जी का जाना एक अपूरणीय क्षति है।

स्वच्छता को लेकर उनमें जो जज्बा था, वो मैं तब से देखता आ रहा हूं, जब मैं गुजरात में था। जब मैं दिल्ली आया तब उनसे भिन्न–भिन्न विषयों पर संवाद और बढ़ गया था। मुझे याद है, जब मैंने साल 2014 में लाल किले से स्वच्छता के विषय पर चर्चा की थी, तो बिंदेश्वरी जी कितने उत्साहित हो गए थे। वो पहले दिन से ही स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ गए थे। उनके प्रयासों ने इस अभियान को बहुत ताकत दी।

हम अक्सर सुनते हैं 'वन लाइफ, वन मिशन', लेकिन 'वन लाइफ, वन मिशन' क्या होता है, ये बिंदेश्वरी जी के जीवन सार में नजर आता है। उन्होंने अपना पूरा जीवन स्वच्छता और उससे जुड़े विषयों के लिए समर्पित कर दिया। 80 साल की आयु में भी वो अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उतने ही ऊर्जावान थे। वो एक तरह से चिर युवा थे। जिस राह पर दशकों पहले चले थे, उस राह पर अटल रहे, अडिग रहे।

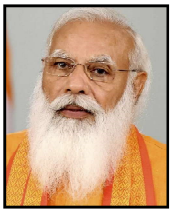

बिंदेश्वरी जी के समाज कार्यों का दायरा स्वच्छता से भी आगे बढ़कर था। उन्होंने वृंदावन, काशी, उत्तराखंड और अन्य क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण से जुड़े भी अनेक कार्य किए। विशेषकर ऐसी बेसहारा महिलाएं, जिनका कोई नहीं होता, उनकी मदद के लिए बिंदेश्वरी जी ने बड़े अभियान चलाए।

– नरेंद्र मोदी

आजकल अगर कोई टॉयलेट जैसे विषय पर फिल्म बनाता है तो इसे लेकर चर्चा होने लगती है। लोग सोचने लगते हैं कि ये भी कोई विषय हुआ? हम अंदाजा लगा सकते हैं कि उस दौर में बिंदेश्वरी जी के लिए शौचालय जैसे विषय पर काम करना कितना मुश्किल रहा होगा। उन्हें खुद कितने ही संघर्ष से गुजरना पड़ा, लोगों की बातें सुननी पड़ीं, लोगों ने उनका उपहास भी उड़ाया, लेकिन समाज सेवा की उनकी प्रतिबद्धता इतनी बड़ी थी कि उन्होंने अपना जीवन इस काम में लगा दिया।

बिंदेश्वरी जी का एक बहुत बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने गांधी जी के स्वच्छता के विचारों का संस्थागत समाधान दिया। मैं समझता हूं यह मैनेजमेंट के छात्रों के लिए अध्ययन का बहुत सटीक विषय है।

विचार कितना ही बड़ा क्यों ना हो, लेकिन उसे सही तरीके सेइंप्लीमेंट ना किया जाए, जमीन पर ना उतारा जाए तो फिर वो विचार अप्रासंगिक हो जाता है, निरर्थक हो जाता है। बिंदेश्वरी जी ने स्वच्छता के विचार को, एक बहुत ही इनोवेटिव तरीके से एक संस्था का रूप दिया। सुलभ इंटरनेशनल के माध्यम से उन्होंने एक ऐसा आर्थिक मॉडल समाज को दिया, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। आज उनके ही परिश्रम का परिणाम है कि सुलभ शौचालय के भी कई तरह के मॉडल बने और इस संस्था का देश के कोने–कोने में विस्तार हुआ।

हमारी आज की युवा पीढ़ी को बिंदेश्वरी पाठक जी के जीवन से श्रम की गरिमा करना भी सीखना चाहिए। उनके लिए न कोई काम छोटा था और न ही कोई व्यक्ति। साफ–सफाई

के काम में जुटे हमारे भाई–बहनों को गरिमामयी जीवन दिलवाने के लिए उनके प्रयास की दुनिया भर में प्रशंसा हुई है। मुझे याद है, मैंने जब साफ–सफाई करने वाले भाई–बहनों के पैर धोये थे, तो बिंदेश्वरी जी इतना भावुक हो गए थे कि उन्होंने मुझसे काफी देर तक उस प्रसंग की चर्चा की थी।

मुझे संतोष है कि स्वच्छ भारत अभियान आज गरीबों के लिए गरिमामय जीवन का प्रतीक बन गया है। ऐसी भी कई रिपोर्ट्स आईं हैं, जिनसे ये साबित हुआ है कि स्वच्छ भारत अभियान के कारण आम लोगों को गंदगी से होने वाली बीमारियों से मुक्ति मिल रही है और स्वस्थ जीवन के रास्ते खुल रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी कहा है कि स्वच्छ भारत मिशन की वजह से देश में तीन लाख लोगों की मृत्यु होने से रुकी है। इतना ही नहीं, यूनिसेफ ने यह तक कहा है कि स्वच्छ भारत मिशन की वजह से गरीबों के हर साल 50 हजार रुपए तक बच रहे हैं। अगर स्वच्छ भारत मिशन नहीं होता तो इतने ही रुपए गरीबों को, गंदगी से होने वाली बीमारियों के इलाज में खर्च करने पड़ते। स्वच्छ भारत मिशन को इस ऊंचाई पर पहुंचाने के लिए बिंदेश्वरी जी का मार्गदर्शन बहुत ही उपयोगी रहा।

बिंदेश्वरी जी के समाज कार्यों का दायरा स्वच्छता से भी आगे बढ़कर था। उन्होंने वृंदावन, काशी, उत्तराखंड और अन्य क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण से जुड़े भी अनेक कार्य किए। विशेषकर ऐसी बेसहारा महिलाएं, जिनका कोई नहीं होता, उनकी मदद के लिए बिंदेश्वरी जी ने बड़े अभियान चलाए।

बिंदेश्वरी जी के समर्पण भाव से जुड़ा एक और वाकया मुझे याद आता है। गांधी शांति पुरस्कार के लिए नाम तय करने वाली कमेटी में बिंदेश्वरी जी भी थे। एक बार इस कमेटी की बैठक तय हुई तो उस समय बिंदेश्वरी जी विदेश यात्रा पर थे। जैसे ही उन्हें इस बैठक का पता चला, उन्होंने कहा कि मैं तुरंत वापस आ जाता हूं। तब मैंने उन्हें आग्रह किया था कि वो अपने सुझाव विदेश से ही भेज दें। बहुत आग्रह के बाद वो मेरी बात माने थे। ये दिखाता है कि बिंदेश्वरी जी अपने कर्तव्यों के प्रति कितना सजग रहते थे।

आज जब बिंदेश्वरी पाठक जी, भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, तो हमें उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप, स्वच्छता के संकल्प को फिर दोहराना है। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत आवश्यक है कि भारत स्वच्छ भी हो, स्वस्थ भी हो। इसके लिए हमें बिंदेश्वरी जी के प्रयासों को निरंतर आगे बढ़ाना होगा।

स्वच्छ भारत से स्वस्थ भारत, स्वस्थ भारत से समरस भारत, समरस भारत से सशक्त भारत, सशक्त भारत से समृद्ध भारत की ये यात्रा, अम तकाल की सबसे जीवंत यात्रा होगी। हां, इस यात्रा में मुझे बिंदेश्वरी जी की कमी बहुत महसूस होगी। उन्हें एक बार फिर विनम्र श्रद्धांजलि। ❑❑

दिल्ली से प्रकाशित हिंदी हिन्दुस्तान समाचार पत्र में दिनांक 19 अगस्त 2023 को प्रकाशित आलेख को हु–ब–हु स्वदेशी के पाठकों के लिए साभार। https://www.livehindustan.com/blog/story-hindustan-opinion-column-20-august-2023-8595930.html

:: सदस्यता संबंधी सूचना ::

अधिक जानकारी के लिए देखें :
http://swadeshionline.in/

मान्यवर,

स्वदेशी पत्रिका आज देश में चल रहे स्वदेशी आंदोलनों का स्थापित प्रतीक बन चुकी है। पिछले कई वर्षों से स्वदेशी पत्रिका ने असंगत एवं एकतरफा वैश्वीकरण, जनविरोधी आर्थिक उदारीकरण के विरोध एवं वैकल्पिक और रचनात्मक स्वदेशी आंदोलन के पक्ष में एक सक्रिय प्रहरी के नाते हमेशा आपको जागरूक बनाया है एवं आपसे संवाद स्थापित किया है। विगत कालखंड में इन सभी मुद्दों पर हमें आप जैसे सजग पाठकों का अपेक्षित सहयोग भी मिलता रहा है और भविष्य में भी मिलेगा ऐसा, विश्वास है।

आपसे आग्रह है कि स्वदेशी पत्रिका की आपकी सदस्यता अवधि यदि समाप्त हो गई हो तो कृपया पिछले समय से आगामी वर्ष तक की राशि धनादेश (मनीआर्डर), चेक एवं मांग पत्र (डिमांड ड्राफ्ट) के माध्यम से शीघ्र भेजने की कृपा करें। पत्रिका के लिफाफे के उपर चिपकाए गए पते की प्रथम पंक्ति में सदस्यता अवधि अंकित है। आप अपनी सदस्यता राशि ''स्वदेशी पत्रिका'' के नाम पत्रिका के कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। सदस्यता अद्यतन न हो पाने की स्थिति में वित्तीय कारणों से पत्रिका आगे जारी रखना कठिन होगा।

सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार है :–

स्वदेशी पत्रिका	*वार्षिक*	*आजीवन*
हिन्दी	150 रुपए	1500/– रुपए
अंग्रेजी	150 रुपए	1500/– रुपए

हमें आपका सहयोग स्वदेशी आंदोलन को राष्ट्रव्यापी एवं जनोन्मुखी बनाने में प्रमुख भूमिका निभाएगा। कृपया स्वदेशी पत्रिका स्वयं भी पढ़ें एवं अन्य को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। पत्रिका के संबंध में अपना निष्पक्ष विचार हमें अवश्य भेजें।

आप सीधे बैंक ऑफ इंडिया, खाता नं. **602510110002740, IFSC : BKID- 0006025 (Ramakrishnapuram)** में जमा करवा सकते हैं और उसकी रसीद और अपना पता आप कार्यालय में अवश्य भेजे।

स्वदेशी पत्रिका कार्यालय, 'धर्मक्षेत्र' शिव शक्ति मंदिर, सैक्टर–8, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22

ब्रिक्सः बड़ा लेकिन बेहतर!

ना ना करते अंततः ब्रिक्स के विस्तार पर भारत भी मान गया है। मूल ब्रिक्स देशों के नवीनतम शिखर सम्मेलन के बाद समूह का विस्तार हुआ है और इसमें 6 और देश – सऊदी अरब, ईरान, मिस्र, अर्जेंटीना, इथियोपिया और संयुक्त अरब अमीरात को शामिल किया गया है। ब्रिक्स समूह में इन देशों को शामिल करने के लिए चीन और रूस बहुत पहले से रणनीतिक मेहनत कर रहे थे। हालांकि भारत हाल तक एक तरह से अनिच्छुक था, लेकिन हानि–लाभ के जोड़ घटाव के बाद भारत ने भी अब हां कर दी है।

छः सदस्य देशों के शामिल होने के बाद विस्तारित समूह दुनिया की 46 प्रतिशत आबादी और इसके 30 प्रतिशत आर्थिक उत्पादन का प्रतिनिधित्व करेगा। वर्तमान में पांच सदस्यीय समूह दुनिया की 40 प्रतिशत आबादी को नियंत्रित करता है और वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 26 प्रतिशत ही उत्पन्न करता है। हालांकि सबसे बड़ा प्रभाव वैश्विक तेल उत्पादन की हिस्सेदारी के संदर्भ में होगा, जो मौजूदा 18 प्रतिशत से बढ़कर 40 प्रतिशत तक हो जाएगा। दूसरी ओर समूह की तेल खपत हिस्सेदारी 22 प्रतिशत से बढ़कर 36 प्रतिशत हो जाएगी। इसी प्रकार वैश्विक व्यापार में उनकी हिस्सेदारी 20 प्रतिशत से बढ़कर 25 प्रतिशत हो जाएगी और वैश्विक सेवा व्यापार में उनकी हिस्सेदारी 12 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत हो जाएगी। अंततः वैश्विक विदेशी मुद्रा भंडार में उनकी हिस्सेदारी दुनिया के कुल 39 प्रतिशत से बढ़कर 45 प्रतिशत हो जाएगी।

इस प्रकार यह एक तरह से एक नए दक्षिण के उदय का संकेत देता है, जो सभी मामलों में विशेष रूप से वैश्विक व्यापार, ऊर्जा, सुरक्षा, वैश्विक मामलों और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा में वैश्विक उत्तर के अधिपति को संतुलित चुनौती देगा। अगर समूह के सदस्य एकजुट होकर काम करेंगे तो व्यापार की नई निर्धारित शर्तों के तहत वैश्विक व्यापार दक्षिण के पक्ष में झुक जाएगा। वास्तव में एक नई वैश्विक व्यवस्था बन सकती है। समूह के भीतर चीन और भारत मिलकर सकल घरेलू उत्पाद में 74 प्रतिशत का योगदान दे सकते हैं। इस क्रम में एक जो महत्वपूर्ण बात होगी, वह यह है कि चीन ब्रिक्स के 70 प्रतिशत को नियंत्रित करता है। नए समूह के नए सदस्यों के जुड़ जाने के बाद केवल 62 प्रतिशत ही उसके हिस्से होगा, जबकि भारत के लिए यह संख्या 13 प्रतिशत से घटकर 12 प्रतिशत हो जाएगी। मिलकर बने नए समूह में 3.7 अरब लोग शामिल होंगे।

अपनी भिन्न संरचना को देखते हुए ब्रिक्स ने केवल एक सीमित उद्देश्य पूरा किया है निकट भविष्य में इसके और अधिक विस्तृत होने पर भारत के सामने अवसर और चुनौतियां दोनों हैं।

– के.के. श्रीवास्तव

दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने के कारण यह समूह एक महत्वाकांक्षाओं का समूह बन गया है। वहीं पश्चिम के अधिपति के खिलाफ एक मजबूत दीवार की तरह खड़ा हुआ है। वास्तव में इस ब्लॉक का जन्म मौजूदा वैश्विक आर्थिक परिदृश्य को चुनौती देने के लिए ही वर्ष 2009 में किया गया था। इसकी स्थापना उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई थी, जिसमें बाद में दक्षिण अफ्रीका को जोड़ा गया। जहां तक आर्थिक संभावनाओं का सवाल है, तो विशुद्ध रूप से भारतीय परिपेक्ष में भी चीज आशाजनक होती दिखाई देती हैं। लेकिन इससे पहले हमें समूह के कुछ लक्षित निहितार्थों के बारे में भी जानना होगा।

नई विश्व व्यवस्था में यह विकासशील देशों की आवाज का अधिक सशक्त रूप से प्रतिनिधित्व कर रहा है। इसके नियंत्रण में तेल होगा। इसके सदस्य देश एक साथ ही

उत्पादक भी होंगे और उपभोक्ता भी होंगे। 2001 के शिखर सम्मेलन के दौरान सदस्यों के बीच व्यापार में उपयोग के लिए ब्रिक्स मुद्रा स्थापित करने की बात चल रही थी, लेकिन अंततः इस पर कोई काम नहीं हुआ। हाल ही में अब डी–डालरीकरण की संभावना बढ़ी है, लेकिन हम कई असुविधाजनक तत्वों से अपनी आंखें नहीं हटा सकते। अपनी मूल महत्वाकांक्षाओं के बावजूद यह अपने वादे को पूरा करने में काफी हद तक विफल रहा है। तो क्या सदस्य देशों के विस्तार से यह आपसी सहयोग हासिल करने में सफल हुआ है? चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि ब्रिक्स, जी–7 को चुनौती दे सकता है, लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि जी–7 अमेरिका द्वारा संचालित विकसित देशों का एक राजनीतिक गठबंधन है। वे राजनीतिक और कूटनीतिक मुद्दों पर समान विचार रखते हैं और उनके बीच मतभेद भी बहुत ही कम है।

दूसरी और ब्रिक्स में शासन मॉडल का मिश्रण है। लोकतंत्र से लेकर एक पार्टी शासन तक के देश इसमें शामिल है। इसके अलावा पड़ोसी देश चीन और भारत के बीच कई मामलों में एक दूसरे के प्रति अविश्वास के साथ आशंकापूर्ण संबंध है, दोनों के बीच सीमा विवाद अभी नहीं सुलझा है। हालांकि दोनों देशों ने लड़ाई नहीं की है। इसके अलावा रूस और चीन के बीच हाल ही में काफी खींचतान हुई है, जिससे भारत को काफी असुविधा झेलनी पड़ी है। इसी तरह ईरान का पश्चिमी प्रतिबंधों के अधीन रहने का एक लंबा इतिहास रहा है। हालांकि सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात खुद को अनुचित पश्चिमी प्रभावों से मुक्त करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन समूह के भीतर ईरान का अरब साम्राज्यों के साथ एक तनावपूर्ण संबंध है।

बावजूद यह आशा की जानी चाहिए कि आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने से विस्तारित ब्रिक्स को इन लंबे समय तक चलने वाले संघर्षों से परे देखने और आम चुनौतियों का सामना करने के लिए काम करने में मदद मिलेगी। इसमें विकास की गतिविधियों के लिए धन सुरक्षित करना, बढ़ी हुई ट्रेडिंग को प्रोत्साहित करना, डॉलर की ताकत को चुनौती देने के लिए काम करना और सह क्रियात्मकता प्रदान करते हुए एक दूसरे को समर्थन करने से समूह मजबूत होगा। और सबसे बढ़कर की आपसी समूह को मजबूती प्रदान करने के लिए अर्थ एवं व्यापार को मूल मंत्र बनाना होगा।

जहां तक भारत का सवाल है, भारत और ब्रिक्स देश के बीच विपक्षी व्यापार बढ़ाने की गुंजाइश मौजूद है। उदाहरण के लिए भारत मिस्र से लकड़ी, खाद्य उत्पादों, प्लास्टिक और रबड़ का आयात बढ़ा सकता है। इसी तरह बहुत सारे उत्पाद हैं, जिन्हें भारत उन्हें निर्यात कर सकता है। वर्तमान में भारत का संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब और यहां तक कि अर्जेंटीना के साथ नकारात्मक व्यापार संतुलन चल रहा है। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात को शामिल करने के साथ 2022–23 में भारत के कुल व्यापार में संशोधित ब्रिक्स हिस्सेदारी लगभग 30 प्रतिशत है। इथोपिया के साथ भारत का व्यापार नगण्य है। भारत इथोपिया के साथ अपना व्यापार बढ़ा सकता है और सऊदी अरब के साथ अपने मौजूदा व्यापार को दुगना कर सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारत अपना व्यापार बढ़ाकर वैश्विक व्यापार मंचों पर पश्चिमी हितों का भी मुकाबला करने में समर्थ हो सकता है। राजनीतिक मोर्चे पर भी भारत अपनी क्षमता के साथ समूह देश को लेकर सीमा पार आतंकवाद, चीन के साथ सीमा विवाद आदि को गंभीरता से उठा सकता है।

कोरोना महामारी के बाद से ही चीन वित्तीय मानदंडों पर लगातार संघर्ष कर रहा है, वैश्विक बाजार में अपनी उपस्थिति मजबूत करने के लिए भारत के लिए यह एक महान अवसर साबित हो सकता है। भारत ब्रिक्स देशों को साथ लेकर अपनी व्यापारिक गतिविधियां तेज कर सकता है। क्योंकि मुख्य प्रतिद्वंद्वी चीन में इस समय आर्थिक विकास में गिरावट, निर्यात का सिमटना, परेशान संपत्ति बाजार, खपत की मांग में कमी आदि कई तरह की प्रतिकूलताएं उभर कर आई हैं।

हालांकि समूह के पिछले रिकार्ड को देखते हुए भी कोई भी आदमी आशावादी नहीं हो सकता, क्योंकि इसका एक राजनीतिक और आर्थिक विरोधाभास है, कुछ ऐसे अनसुलझे प्रश्न हैं जिसका सुलझना अभी न सिर्फ मुश्किल है, बल्कि इसके बढ़ने की संभावना अधिक है। नए संकेतों के मुताबिक चीन भारत के साथ टकराव के मूड में है। नई दिल्ली में आयोजित जी–20 के सम्मेलन में चीन के राष्ट्रपति ने आने से मना कर इसका संकेत दिया है। साथ ही चीन और रूस दोनों मिलकर ब्रिक्स को अमेरिका के नेतृत्व वाली बहुपक्षी प्रणाली के मुकाबले खड़ा करने की आकांक्षा रखते हैं, क्योंकि वह अधिकतम रूप से पश्चिमी प्रतिबंधों और दबाव का सामना करते हैं।

ऐसे में भारत के लिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि ब्रिक्स के विस्तारित समूह को चीन के प्रभुत्व वाला मंच बनने से रोके। भारत कूटनीतिक रूप से इसके लिए प्रयास कर रहा है लेकिन चीन और रूस की उपस्थिति में भारत कितना कर पाता है, यह भविष्य के गर्त में है। हालांकि भारत के लिए इसकी उपयोगिता पर अभी कुछ स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, लेकिन आशा की जानी चाहिए कि भारत इस समूह का बेहतर इस्तेमाल कर सकेगा। ❑❑

उच्चतम न्यायालय और लैंगिक रूढ़िवादिता

लैंगिक न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था की दिशा में उच्चतम न्यायालय ने महत्वपूर्ण कदम उठाया है। हालांकि भारतीय समाज में गहरे जड़ जमा चुके पितृ सत्तात्मक मूल्य इस तरह के सुधारों का अक्सर विरोध करते रहे हैं, लेकिन न्यायालय द्वारा जारी दिशा निर्देश से सकारात्मक आशा जगी है। भारत में लैंगिक भेद की स्थिति यह है कि कपड़े दोनों उतारते हैं, पर वेश्या औरत ही कही जाती है। इसी सोच को दिमाग से निकाल फेंकने के लिए अदालत ने आगे बढ़कर जो पहल की है वह निश्चित रूप से स्वागतयोग्य है।

भारत की मानसिकता भक्तिपूर्ण रही है। राष्ट्रभक्ति भी देश के लोगों में कूट–कूट कर भरी है। भक्ति की यह भावना पुरुषों की तुलना में महिलाओं में कुछ अधिक ही पाई जाती है। महिलाओं के बीच एक आम राय है कि जीवन में उन्हें तय आज्ञाओं का पालन करना ही चाहिए। महिलाएं तुलनात्मक रूप से भावुक भी होती है। यही कारण है कि अधिकांश महिलाएं बच्चा पैदा करने, पुरुषों के प्रति, पतियों के प्रति आज्ञाकारी बने रहने, घर का सारा कामकाज करने, पति के साथ–साथ उनके माता–पिता की देखभाल करने जैसी अनेक चीज़ों को जीवन में स्वाभाविक रूप से स्वीकार करती रही है। भारत में महिलाओं को पढ़ लिखकर आत्मनिर्भर बनाने की बात अब भी कम ही होती है। आर्थिक स्वतंत्रता, समान वेतन, समान अवसर, सम्मानजनक अस्तित्व आदि मामले में महिलाएं पुरुषों से बहुत पीछे हैं। इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में 2.6 मिलियन पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या केवल 1.1 मिलियन है। आईटी और कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में 5 लाख पुरुषों की तुलना में केवल 3 लाख महिलाएं शामिल है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि यह भेदभाव क्यों और कब तक?

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी की गई हैंडबुक का स्पष्ट उद्देश्य वकीलों और न्यायाधीशों को लिंग तटस्थ तथा संवेदनशील होने के लिए मार्गदर्शन करना हो सकता है, लेकिन हमें इसे सामाजिक स्तर पर बदलाव के लिए उत्प्रेरक के रूप में बड़े परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, क्योंकि ऐसी पहल पहली बार नहीं हुई है, पहले भी ऐसे प्रयास होते रहे हैं।

– डॉ. जया कक्कड़

आजादी के बाद प्रारंभ में भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 10 प्रतिशत से भी नीचे थी। वर्ष 2019 से लेकर 2021 के बीच हुई गणना में यह दर सराहनीय रूप से बढ़कर 71. 5 प्रतिशत हो गई है। हालांकि यह पुरुषों के 84.6 प्रतिशत के आंकड़े से अब भी कम है।

रोजगार के मोर्चे पर देखें तो महिला श्रम भागीदारी मात्र 29 प्रतिशत है। केवल 37 प्रतिशत महिलाओं के पास पैन कार्ड है, जबकि 64 प्रतिशत पुरुष पैन कार्ड धारक हैं। देश में केवल 33 प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो इंटरनेट का इस्तेमाल करती हैं।

महिलाओं के समक्ष केवल आर्थिक असमानता की समस्या ही नहीं है, बल्कि कार्य स्थल पर उनके साथ तरह–तरह के लिंग भेद के मामले भी समय–समय पर उभर कर आते रहे हैं। वर्ष 2014 से वर्ष 2023 के दौरान यौन उत्पीड़न की शिकायतों में 70 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में अधिकांश महिलाओं के लिए लैंगिक न्याय अभी दूर की कौड़ी है। ऐसी स्थिति में सुधार के लिए उठाया गया कोई भी कदम सराहनीय है। इसलिए लैंगिक रुढिवादिता को खत्म करने के लिए उच्चतम न्यायालय की यह पहल निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

मालूम हो कि अमेरिका में धूम्रपान एक सामाजिक रूप से स्वीकार्य प्रथा थी। यह जानते हुए भी कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, वहां की एक सिगरेट कंपनी ने अपने विज्ञापन अभियान में महिला केंद्रित नारा गढ़ा था, "तुम बहुत आगे बढ़ चुकी हो बेबी"। तब किसी ने भी अमेरिकी सिगरेट कंपनी के द्वारा गढ़े गए बेबी शब्द पर आपत्ति नहीं जताई थी। एक दौर में भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी को गूंगी गुड़िया कहकर संबोधित किया गया था। तात्पर्य है कि महिलाओं के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले या उनके बारे में सोचे जाने वाले शब्द वास्तव में हानिकारक है, उन्हें बदलने की जरूरत है। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि समाज में व्याप्त लैंगिक दृष्टिकोण को भी बदलना होगा। समस्या केवल शब्द नहीं है बल्कि व्यक्ति की मानसिकता और सोच है।

उच्चतम न्यायालय का सुझाव बिल्कुल सही है कि समाज को सामाजिक वास्तविकताओं और महिलाओं के सामने आने वाली अन्य चुनौतियों को गंभीरता से लेना चाहिए। इस बात पर भी जोर दिया गया है कि यह मान लेना गलत है कि महिलाएं स्वाभाविक रूप से भावुक अतार्किक तथा निर्णय लेने में अक्षम होती हैं।

यह समस्या तब और बड़ी दिखने लगती है जब कोई न्यायाधीश पीड़ित को बलात्कारियों के साथ शादी रचाने अथवा पत्नियों द्वारा घरेलू देवताओं के अपमान को तलाक के आधार के रूप में देखने लगते हैं। एक नागरिक के रूप में बेटियां आज भी सुरक्षात्मक चारदिवारी के बाहर हैं। इसलिए भी महिलाओं को और अधिक स्वायत्तता और समानता की आवश्यकता है। सदियों से लिंग भेद का शिकार होती आ रही एक बड़ी आबादी को अब खुलकर अपनी प्रतिभा दिखाने, स्पष्ट रूप से अपनी बात रखने तथा समाज में समानता के आधार पर आगे बढ़ाने की मानसिकता की जरूरत है।

इसी के मद्देनजर उच्चतम न्यायालय ने लिंग के आधार पर रूढ़िवादिता का मुकाबला करने वाली एक पुस्तिका जारी कर महत्वपूर्ण कदम उठाया है। लिंग के बीच असमानताओं को बढ़ाने वाली रूढ़िवादिता को दूर करने का निर्देश दिया है। न्यायालय ने महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध प्रचलित शब्दों के लिए वैकल्पिक शब्द और वाक्यांश भी पेश किए हैं। दिशा निर्देश के मुताबिक एक महिला शरीर व्यभिचारणी नहीं, बल्कि विवाहेत्तर यौन संबंध में संलग्न है। इसी तरह के अनेक शब्द जो महिलाओं के प्रति हीन दृष्टि पैदा करते हैं, उन शब्दों से दूरी बनाने के निर्देश दिए गए हैं। भेदभाव की धारणाओं को खत्म करने की विधि के रूप में इसे प्रस्तुत किया गया है। उम्मीद की जानी चाहिए कि भविष्य में फिर कभी मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय जैसा और कोई फैसला अदालत की ओर से भविष्य में नहीं आएगा, जिसमें यौन उत्पीड़न के आरोपी को पीड़िता से राखी बंधवाने और उसकी रक्षा करने का वचन देने के लिए कहा गया था।

उच्चतम न्यायालय का सुझाव बिल्कुल सही है कि समाज को सामाजिक वास्तविकताओं और महिलाओं के सामने आने वाली अन्य चुनौतियों को गंभीरता से लेना चाहिए। इस बात पर भी जोर दिया गया है कि यह मान लेना गलत है कि महिलाएं स्वाभाविक रूप से भावुक अतार्किक तथा निर्णय लेने में अक्षम होती हैं। पितृसत्तात्मक परिवार में एक लड़की को सामाजिक जरूरत के नाम पर शादी के लिए मजबूर किया जाता रहा है। ऐसी स्थितियों से महिलाएं खुद अपना विकास कर बाहर निकल सकती हैं। शैक्षिक और वित्तीय आधार को मजबूत कर वे न सिर्फ अपना भविष्य संवार सकती हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के भी हालत बदलने में सहयोग कर सकती है।

लैंगिक असमानता तथा समाज में व्याप्त रूढ़िवादी शब्दों को सदा–सदा के लिए खत्म करने के लिए उच्चतम न्यायालय ने पहल की है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी की गई हैंडबुक का स्पष्ट उद्देश्य वकीलों और न्यायाधीशों को लिंग तटस्थ तथा संवेदनशील होने के लिए मार्गदर्शन करना हो सकता है, लेकिन हमें इसे सामाजिक स्तर पर बदलाव के लिए उत्प्रेरक के रूप में बड़े परिप्रेक्ष्य में देखना होगा, क्योंकि ऐसी पहल पहली बार नहीं हुई है, पहले भी ऐसे प्रयास होते रहे हैं। ❑❑

अब अन्न धन से संपन्न हम

किसी जमाने में जिस देश को 'जहा से सीधे मुंह तक भोजन पहुंचने वाली स्थिति में खाने वाला माना जाता था, यानि खाद्यान्न के लिए उसे आयात पर निर्भर रहना पड़ता था, उसकी कहानी वर्ष 2023 तक आते–आते पूरी तरह पलट चुकी है। आज वह देश दुनिया के भोजन आपूर्तिकर्ता की स्थिति में आ गया है। शायद 2023 भारत की आजादी के पहले 75 वर्षों की सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में इतिहास में दर्ज होने जा रहा है।

सन् 1943 में बंगाल में आए भीषण अकाल में कम–से–कम 30 लाख लोगों की खोने की विभीषिका से गुजरने के बाद आज भारत इस स्थिति में पहुंच चुका है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और अंतरराष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई) उस पर दबाव डाल रहे हैं कि यह इस वर्ष गैर बासमती चावल के साथ–साथ गेहूं के निर्यात पर लगाई रोक को वापस ले ले। यह स्थिति कृषि क्षेत्र में उठाए गए व्यापक कदमों को स्वतः बयान करने के लिए पर्याप्त है। भारत इन वर्षों के दौरान गेहूं, चावल, फल एवं सब्जियों का दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बनकर उभरा है। भारत इस समय दुनिया में सबसे बड़ा दूध का उत्पादक भी है और साथ ही दुनिया में चीनी का सबसे बड़ा उत्पादक एवं उपभोक्ता भी है।

वैश्विक व्यापार में बढ़ती हिस्सेदारी

समूचित दाम और सार्वजनिक खरीद नीतियों, सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश और कमी वाले क्षेत्रों में भोजन के वितरण जैसे कदमों की मदद और समर्थन के साथ हरित क्रांति ने निसंदेह भोजन की गंभीर कमी के युग को समाप्त कर दिया है। पिछले कुछ वर्षों में इस प्रकार की लचीली व्यवस्था बन चुकी है कि लगातार कई वर्षों तक गंभीर सूखा पड़ने पर भी अकाल की दूर–दूर तक छाया नहीं दिखाई पड़ीं। हरित क्रांति शुरू होने से एक साल पहले भारत में श्वेत का सूत्रपात हुआ था, जिसने भारत को दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक बना

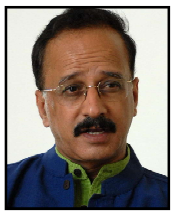

विश्व की अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही है। कृषि को मजबूत करना ग्रामीण खर्च में सुधार करने का एकमात्र तरीका है। इससे अधिक मांग पैदा होगी, जो बदले में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पहियों को आगे बढ़ाएगी।

– देविंदर शर्मा

दिया। इस समय दूध का उत्पादन 210 मिलियन टन से भी ज्यादा हो चुका है।

भारत वर्ष 2022–23 में 40 फीसदी के वैश्विक चावल व्यापार में हिस्सेदारी के साथ दुनिया का सबसे बड़ा चावल निर्यातक बन चुकाहै। गेहूं के मामले में जहां तक निर्यात का प्रश्न है, भारत की बड़ी भागदारी नहीं है। फिर भी हाल में अचानक प्रतिबंध लगाए जाने से पहले यह वर्ष 2022–23 में 10 मिलियन टन गेहूं निर्यात करने की योजना बना रहा था। निर्यात पर यह रोक 2022–23 में अचानक गर्म हवा के थपेड़ों के बढ़ने से गेहूं उत्पादन में गिरावट से घरेलू आपूर्ति कम होने के कारण लगाई गई थी।

रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण आपूर्ति में गिरावट के चलते दुनिया भर में गेहूं की मांग बढ़ रही थी, लेकिन भारत ने अपनी घरेलू जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षात्मक रूख अपनाने का फैसला किया। हालांकि हरित क्रांति से छोटे किसानों को फायदा नहीं हुआ था, फिर भी समृद्धि की गुलाबी तस्वीर पेश करने का प्रयास किया गया था।

कृषि को आर्थिक रूप से सक्षम बनाएं

इन 75 वर्षों में किसानों ने शानदार बंपर फसल पाने के लिए जी–तोड़ मेहनत की है। साल–दर–साल उसने रिकार्ड तोड़े हैं। लेकिन हर गुजरते साल के साथ किसान परिवारों की स्थिति और खराब होती गई है। वर्ष 2011–12 और 2015–16 के बीच वास्तविक कृषि आय हर साल आधे से भी कम प्रतिशत के बीच घूमती रही। और उसके बाद नीति आयोग ने स्वतः इस बात की पुष्टि की थी कि 2016 से 2019 के बीच कृषि आय में वृद्धि 'शून्य के निकट' रही थी। हालांकि सरकार ने 2016 में अगले पांच साल में कृषि आय को दोगुना करने का वादा किया था, लेकिन इसे हासिल करने की पुख्ता योजना के

कृषि में लगभग 50 फीसदी आबादी कार्यरत होने के साथ एक उन्नत खेती, भारत जैसे देश के सामने आने वाली विशाल रोजगार संबंधी चुनौतियों का उत्तर हो सकती है।

बिना यह वादा पूरा नहीं हो सका। वर्ष 2020–21 में नई दिल्ली के द्वार पर किसानों के यादगार आंदोलन के कारण तीन विवादित कृषि कानूनों को भी वापस लिया गया। लगातार घटती कृषि आय के लिए कोई दीर्घकालिक समाधान अब तक किसानों को हासिल नहीं हो पाया है।

अब भारत अमृत काल में प्रवेश कर रहा है। वर्ष 2047 तक भारत को विकास का दूसरा इंजन बनने का लक्ष्य रखना होगा। कृषि में लगभग 50 फीसदी आबादी कार्यरत होने के साथ एक उन्नत खेती, भारत जैसे देश के सामने आने वाली विशाल रोजगार संबंधी चुनौतियों का उत्तर हो सकती है। ग्रामीण आबादी को मजबूर कर खेती को छोड़, सस्ते श्रमिकों की जरूरत वाले शहरी केंद्रों में स्थानांतरित करना एक पुरानी आर्थिक सोच बन चुकी है। इस वक्त की फौरी जरूरत है कि इस प्रभुत्व वाली आर्थिक सोच को पलट दिया जाए और कृषि को आर्थिक रूप से व्यवहार्य, पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ और लाभप्रद बनाया जाए।

अगले पांच साल कृषि के लिए...

प्रतिदिन चार डॉलर यानि 280 रूपये से कम आय पर रहने वाले ब्रिक्स देशों के बीच जनसंख्या के अनुपात का आकलन करने के लिए विश्व बैंक के मैट्रिक्स का उपयोग करते हुए देखें तो भारत इस तालिका में सबसे ऊपर है। इसमें 91 फीसदी आबादी उस बेंचमार्क से नीचे होने के साथ दक्षिण अफ्रीका की 50.3 फीसदी आबादी प्रतिदिन 280 रूपये से कम पर जीवनयापन करती है, यह तथ्य दर्शाता है कि आर्थिक सुधारों का लाभ कुल आबादी के नौ प्रतिशत लोगों तक पहुंच पाया है।

विश्व की अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही है। कृषि को मजबूत करना ग्रामीण खर्च में सुधार करने का एकमात्र तरीका है। इससे अधिक मांग पैदा होगी, जो बदले में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पहियों को आगे बढ़ाएगी। अगर किसान अपनी उगाई जाने वाली प्रत्येक फसल से लाभ कम सकें तो कृषि का चेहरा हमेशा के लिए बेहतर हो जायेगा। और, एक बार कृषि क्षेत्र लाभप्रद हो जाएगा तो शहरों से गांवों की तरफ उलटा पलायन देखने को मिलेगा और इससे बेरोजगार युवाओं की बड़ी संख्या को काम मिलने लगेगा। जैसा कि मैं पहले भी कई बार दोहरा चुका हूं कि अकेले कृषि ही भारतीय अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने का माद्दा रखती है। अगले पांच साल कृषि के लिए दीजिए। यह अर्थव्यवस्था को एक मजबूत प्रभाव प्रदान करेगी, जो भारत के वर्ष 2047 में प्रवेश करने तक दिखाई पड़ने लगेगा। यह 'निर्यात के साथ साक्षात्कार' जैसा होगा, जिसका सपना देश के पूर्वजों ने देखा था। ❑❑

साभार: हिन्दुस्तान समाचार

देश के विखंड़न के बीज बोती जातिगत जनगणना

देश में जिस प्रकार कुछ जातिवादी राजनेताओं के द्वारा जातिगत जनगणना कराने पर बल दिया दिया जा रहा है, वह न केवल अल्पकालीन राजनीतिक सत्ता सुख प्राप्त करने के लिए आतुर है बल्कि इससे नासमझ लोग देश को खंड़ खंड़ करने का भी दृष्टिकोण रख सकते है। गरीब किसी भी जाति का हो, वह गरीब है और अमीर किसी भी जाति का हो, वह अमीर है। विश्व में इस समय मात्र दो ही जातियां है वह है केवल अमीर व गरीब। शेष सभी जातियों का विश्लेषण मात्र अपनी राजनीति की दुकानें चलाने के लिए मात्र दुराग्रह ही कहा जा सकता है जिनका राजनीतिक नाटक किसी को लाभ नहीं पहुंचता बल्कि स्वतंत्रता के 76 वर्ष बीतने पर भी लोगों को बेवकूफ बना कर उनका उद्देश्य उनसे उनका वोट ही प्राप्त करना है। गरीब व पिछड़ी जाति के लोंगों की स्थिति तस की जस बनी हुई है, जिन तथाकथित गरीब व पिछड़ी जाति के लोगों को आरक्षण का लाभ मिल चुका है, वे भी अपने बच्चों को आरक्षण निरन्तर चाहते रहते है। इससे वे केवल अपने भाइयों का ही हिस्सा खा रहे है तथा आरक्षण की राजनीति करते रहते है।

जातिय गणना से जिन जातियों का जिन्न एक बार बोतल से बाहर निकला तो उसे वापस बोतल में न ड़ाला जा सकेगा और देश गृह युद्ध की तरफ चला जायेगा। जातिगत जनगणना के आंकड़े जो भी आये परन्तु उनसे सम्पूर्ण देश में ही जातिगत द्वेष व वैमनस्य जरुर उत्पन्न होगा। कर्नाटक राज्य में 2014 में सिद्धरैमयया ने 192 करोड रुपये लगा कर जातिगत जनगणना अथवा सर्वे करवाया था परन्तु उनकी भी हिम्मत नहीं हुई थी कि वे इस गणना के आंकड़ों को प्रकाशित कर सके। भारतीय जनतांत्रिक राजव्यवस्था में इस जातिगत गणना अथवा सर्वे के आंकडों का राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग (दुरुपयोग) ही होने की ही आशंका अधिक है। देश के जातिवादी राजनेता मात्र स्वंय का ही राजनीतिक लाभ देखते है। देश से उन्हें कोई मतलब नहीं। राजनीतिक स्वार्थों के चलते भारतीय समाज की विविधता की विशेषता का संकीर्ण लाभ ही उठाया जाता है। यह संकीर्ण लाभ उठाने की प्रवृति

देश में किसी वर्ग को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। वरना तो जातिगत जनगणना से देश में विखंड़न की प्रक्रिया और तेज हो जायेगी और देश का विकास अवरुद्ध हो जायेगा।

– डॉ. सूर्यप्रकाश अग्रवाल

इस गणना के आंकड़े प्राकाशित होने के बाद और तेजी से अवश्य बढ़ेगी। देश के राजनेता और जो अभी अभी राजनेता बनने की ओर अग्रसर हो रहे है वे विभिन्न जातियों में पहले से ही फैली दरारों को पाटने का कोई काम नहीं करते है। उल्टे उन्हें भ्रम में ड़ाल कर जातियों में दरारों को और भी चौड़ा करने का ही काम करते है।

वर्तमान में भारत को विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था का सम्मान दिलाने के लिए प्रयास किये जा रहे है। परन्तु कुछ जातिवादी राजनेता देश को पिछड़ा व बीमारु होने का रुप ही विश्व के सामने रखने के इच्छुक दिखाई दे रहे है। इस समय समाज में एकता व प्रेम का भाव पैदा करने की आवश्यकता है। वंचित वर्गों के सशक्तीकरण के समस्त प्रयास गत 76 वर्षो से किये जा रहे है और आगे भी जारी रहेंगे। अब समय है कि उन सभी प्रयासों की समीक्षा की जानी चाहिए और प्रयासों में तेजी लानी चाहिए। वंचितों को ऊपर उठाने के लिए समस्त उपकरण ज्यों के त्यों लागू रहेंगे परन्तु जातिवादी राजनेता भवष्यि का कोई कार्यक्रम लेकर नहीं अपतिु जातिगत विद्वेष ही उत्पन्न करने से ही उन्हें अपना ज्यादा व देश का कम लाभ दिखाई देता है। जातिवादी राजनेता समाज में समभाव के स्थान पर दुराव बढ़ाने कर प्रत्येक सम्भव कोशिश करते दिखाई देते रहते है।

जातिगत जनगणना अथवा सर्वे के आंकड़े सामने आने पर उसके प्रतिकूल प्रभाव ही अधिक दिखाई देंगे तब राजनेता अपनी जिम्मेदारी से भाग कर विपक्ष पर दोषारोपण करने से भी बाज नहीं आयेंगें। सबसे ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव उद्योगों में निवेश पर पड़ेगा क्योंकि निजी क्षेत्र में सेवा तथा वस्तु की उत्पादकता व व्यावसायिक प्रतियोगिता पर आधारित होता है। वहां यदि राजनेता ने अपना स्वार्थ दिखाते हुए आरक्षण लागू कर दिया तो निवेश के आगमन को सबसे ज्यादा झटका लगेगा और उससे निवेश हतोत्साहित ही हो जायेगा जिसका सीघा सीघा प्रभाव युवाओं के रोजगार पर प्रतिकूल रुप से पड़ेगा। इस समय आवश्यकता है कि देश में 74 वर्ष से पुरानी नौकरियां में आरक्षण की व्यवस्था की सम्पूर्ण समीक्षा की जाय व जिन लोगों को आरक्षण मिल चुका है उनके स्थान पर उन्हीं ही जाति के अन्य लोगों को आरक्षण दिया जाय।

देश में अंग्रेजों ने 1931 में जातिगत जनगणना करवाई थी। अब यदि जनगणना होती है तो तमाम वास्तविकताओं का पता चलेगा तथा आंकड़ों की उपयोगिता राजनेता तय कर सकेंगे। जातिगत जनगणना के स्थान पर केन्द्र सरकार के द्वारा 2021 से बाट जोहती सम्पूर्ण देश की जनगणना की करवाई की जानी चाहिए उसमें जाति का एक कालम जैसा हो सकता है, वैसा होना चाहिए। मात्र केवल जातिगत जनगणना होने से इससे जातिगत आरक्षण का लाभ कहां तक पंहुचता है यह भी पता चलेगा। यह कार्यवाई हुई और आरक्षण का प्रातिशत 50 प्रतिशत से बढ़ा तो समाज में हो हल्ला मच जायेगा। अनुसूचित व पिछड़ी जातियों को मिलने वाला आरक्षण का लाभ कुछ वर्ग ही प्राप्त कर रहे है जबकि कुछ अन्य जरुरतमंद जातियों को यह लाभ नहीं मिला है। कोटे के भीतर कोटा की मांग बढ़ सकती है।

देश की प्रमुख राजनीतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी जातिगत गणना के लिए इच्छुक नहीं दिखाई देती है जबकि विपक्षी दलों के राजनेता भाजपाा को टक्कर देने के लिए जातिगत गणना को अस्त्र बनाने पर तुला हुआ है। विपक्ष जातिगत जनगणना के पक्ष में एक विमर्श खड़ा करने में सफल भी नहीं हुआ है। भाजपा अपने द्वारा घोषित सभी सरकारी योजनाओं का लाभ जातिगत समभाव पर देती है। वह जाति को देख कर लाभ नहीं देती है। जातिगत जनगणना से आरक्षण की अधिकतम सीमा 50 प्रतिशत को बढ़ाने का दबाब बढ़ सकता है। सवर्णों में असंतोष फैलेगा। वैसे भी सवर्णों के अधिकांश युवा भारत में सस्ती शिक्षा ग्रहण करके नौकरियों व रोजगार के लिए विदेशों में पलायन कर जाते है और उन देशों की प्रगति व उन्नति में योगदान देकर हिस्सेदार हो जाते है और भारत को उनसे कोई लाभ भी प्राप्त नहीं हो रहा है। ऐसे युवाओं पर इस जातिगत जनगणना को कोई प्रभाव भी नहीं पड़ेगा। बल्कि अप्रत्यक्ष प्रभाव उनके द्वारा शिक्षा लेने पर ही पड़ेगा कई राज्यों में आरक्षण की निर्धारित सीमा 50 प्रतिशत के पार कर गई है। इससे जातिगत आधार पर विभिन्न अधिकारों की मांग कर रहे वर्ग नए सिरे से मुखर हुए है। दलित, पिछड़े, वंचित वर्ग व वनवासी अब मात्र राजनीति का हथियार ही बन चुके है। उन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना अब राजनेताओं की दृष्टि में जरुरी सा हो गया है।

देश का सम्पूर्ण आर्थिक विकास हो सके, यह सोचा जाना ज्यादा जरुरी है। जातिगत जनगणना की वजाह समान्य जनगणना होनी चाहिए और तब तक लोकसभा के आम चुनावों को पीछे टाल देना चाहिए। उन आंकड़ों का फिर विश्लेषण करना चाहिए। कम से कम लोकसभा के चुनावों को ही दो वर्ष के लिए आगे टाल देने से जनगणना के विश्लेषण करके आगे योजना बनाने में काफी आसानी हो सकेगी। देश में किसी वर्ग को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। वरना तो जातिगत जनगणना से देश में विखंड़न की प्रक्रिया और तेज हो जायेगी और देश का विकास अवरुद्ध हो जायेगा। ❑❑

डॉ. सूर्य प्रकाश अग्रवाल, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.), के वाणिज्य संकाय के संकायाध्यक्ष व ऐसोसियेट प्रोफेसर के पद से व महाविद्यालय के प्राचार्य पद से अवकाश प्राप्त हैं तथा स्वतंत्र लेखक व टिप्पणीकार है।

विश्व में डंका बजाती, भारतीय सनातन संस्कृति

लाखों वर्ष पुरानी भारत की सभ्यता और ज्ञान के अकूत भण्डार को हमारे ऋषि–मुनियों ने विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के माध्यम से सहेज कर रखा, फिर चाहे वे वेद,रामायण, महाभारत, पुराण,गीता या उपनिषद ही क्यों न हों। सभी का संदेश सकल मानव मात्र का कल्याण, नीति,धर्म और कर्म के अनुरूप आचरण करना ही है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद चारों वेदों में ब्रह्मा, ब्राह्मण, विज्ञान, प्रकृति, औषधि, भूगोल, संस्कार, भूगोल, रसायन, गणित, रीतिरिवाज आदि सभी महत्वपूर्ण विषयों से सम्बंधित ज्ञान मौजूद है और इन्हीं वेदों का निचोड़ या कहें सार हमारे उपनिषद हैं जो भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल आधार या आध्यात्मिक दर्शन के स्रोत हैं जिनमें योग, ध्यान, समाधि, चिंतन, मोक्ष आदि से संबंधित बातें मिलती हैं। भारतीय धार्मिक ग्रन्थों को दो भागों में विभाजित किया गया है श्रुति और स्मृति। श्रुति के अंतर्गत वेद आते हैं जबकि स्मृति में इतिहास और वेदों की व्याख्या की पुस्तकें, पुराण,महाभारत, रामायण, स्मृतियां आदि आते हैं। महाभारत के 18 अध्यायों के 700 श्लोकों में से एक भीष्म पर्व का हिस्सा है गीता। गीता में कुल 18 अध्याय हैं, जिनमें भक्ति, ज्ञान, योग,कर्म की विस्तृत चर्चा की गई है। सही मायने में, श्रीमद्भागवत गीता योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की वाणी है, जिसके ज्ञान से मनुष्य की अज्ञानता का अंधकार नष्ट हो जीवन की व्यवहारिक व आध्यात्मिक समस्याओं को सुलझाने के लिए अर्जुन के प्रासंगिक प्रश्नों के उत्तर का वर्णन है गीता।

भारतीय धार्मिक ग्रन्थों में अध्यात्म के साथ भौतिक जीवन को साधते हुए आध्यात्मिक मूल्यों पर चलने का संदेश दिया गया है, क्योंकि भौतिक संपत्ति शरीर के साथ छूट जाती है जबकि इनसे अर्जित आध्यात्मिक संपदा अगले जन्मों में भी हमारे साथ जाती है। 'जगत्यां यत् किं च जगत् अस्ति इदं सर्वम् ईशा वास्यम्। त्यक्येन भूञ्जीथाः। कस्यस्वित् धनं मा गृधः तेन'। ईश्वर सर्व व्यापक है, भौतिक जगत में रहते हुए भी अध्यात्म के लक्ष्य को न् भूलना और सांसारिक लोभ में न फंसना अर्थात अपने कर्म को साधन मानते हुए परम् सत्य की ओर बढ़ना है। भारत ने इसी दर्शन पर चलकर भौतिकता की जमीन पर अध्यात्म की विशाल बुनियाद खड़ी की है।

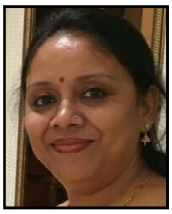

वर्तमान में, भारत जहां खड़ा है यह उसके आध्यात्मिक ज्ञान की परिणिति है। वह दिन भी दूर नहीं जब भारत न् केवल विकसित राष्ट्रों की सूची में शामिल होगा बल्कि अपने परम वैभव को प्राप्त करने में सफल होगा।

–अनुपमा अग्रवाल

उपनिषद दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता से परिपूर्ण ग्रन्थ हैं ये चिंतनशील ऋषियों द्वारा ब्रह्म के विषय में वर्णित ज्ञान के भंडार तो हैं ही साथ ही भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति की मूल धरोहर भी हैं। समस्त भारतीय दार्शनिक चिंतन का मूल उपनिषद ही हैं क्योंकि मानव जीवन के उत्थान के समस्त उपाय उपनिषदों में वर्णित हैं। उपनिषद जीवन मूल्यों अर्थात जो मानव जीवन के लिए कल्याणकारी, शुभ व आदर्श है,की बात करने के अलावा हमें स्वावलंबी बनाने के लिए भी प्रेरित करते हैं।उपनिषदों के चिंतन में धर्म, अर्थ, काम मोक्ष चार पुरुषार्थों में समस्त मानव मूल्य समावेशित हैं पवित्र आचरण, श्रेष्ठ ज्ञान, सत्य,दान,तप,त्याग,लोभ का त्याग,धैर्य,क्षमा आदि उत्तम जीवन मूल्य हैं। स्वावलंबन का आदर्श प्रस्तुत करते हुए ईशोपनिषद में कहा गया है कि "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" अर्थात जो व्यक्ति निरन्तर जीवन समर में अपने सांसारिक कर्मों का संपादक करता है वही स्वयं तथा राष्ट्र को स्वावलंबन की ओर ले जा सकता है।उपनिषद में कर्मकांड की अपेक्षा ज्ञान को अधिक महत्व दिया गया है। 'मातृ देवो भव,पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव' वाक्य में

माता, पिता, आचार्य और अतिथि को देव तुल्य माना गया है।

'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है, का उदघोष भारतीय ऋषि मुनियों ने विश्व कल्याण की कामना से किया था जो सनातन संस्कृति की मूल विचारधारा होने के साथ वर्तमान का वैश्विक चिंतन भी था जो सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से भी समस्त भूमण्ड के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो रहा है। कुटुंब अर्थात परिवार सामाजिक संरचना की सबसे छोटी इकाई होने के साथ सामाजिक जीवन में निरंतरता बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।परिवार उस पुष्ट तने और गहरी नींव वाले वृक्ष की बलिष्ठ शाखाओं के समान होता है जो चारों तरफ फैलकर स्वयं और समाज को आत्मीयता और मनोबल प्रदान कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। भारतीय संसद के प्रवेश द्वार पर अंकित ये ध्येय वाक्य एक दार्शनिक अवधारणा है जो सार्वभौमिक भाईचारे एवं मनुष्यों में परस्पर आपसी संबंधों को पोषित करती है। भारत वसुधैव कुटुम्बकम की इसी अवधारणा को आत्मसात करते हुए न् केवल कोरोना काल में अन्य देशों की सहायता को आगे आया बल्कि तुर्किया और सीरिया में आये विनाशकारी भूकंप के बाद 'ऑपरेशन दोस्त' के द्वारा पर्याप्त सहायता सामग्री पहुंचाई।रूस और यूक्रेन से भारतीय नागरिकों को सकुशल निकालने के लिए 'ऑपरेशन गंगा' चलाया। कोरोना महामारी के समय विदेशों में फंसे भारतीयों को भारत लाने के लिए 'वंदे भारत मिशन' व 'ऑपरेशन समुद्र सेतु' चलाया साथ ही 2015 में नेपाल में आये भूकंप में सहायता सामग्री उपलब्ध कराने हेतु 'ऑपरेशन मैत्री' को अंजाम दिया गया इसके अतिरिक्त सूडान में हिंसा के बीच भारतीयों को सुरक्षित निकालने के लिए 'ऑपरेशन कावेरी'

'वसुधैव कुटुम्बकम' अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है, का उदघोष भारतीय ऋषि मुनियों ने विश्व कल्याण की कामना से किया था जो सनातन संस्कृति की मूल विचारधारा होने के साथ वर्तमान का वैश्विक चिंतन भी था जो सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से भी समस्त भूमण्ड के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो रहा है।

चलाया गया। इन सभी ऑपरेशन को अंजाम देने के पीछे भारत की सोच वसुधैव कुटुम्बकम की ही रही।

ध्येय वाक्यों के रूप में उपनिषदों से लिये गए श्लोक वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक होने के साथ हिंदू राष्ट्र भारत को विश्व गुरु बनाने की राह में सार्थक सिद्ध हो रहे हैं, यही कारण है कि आज दुनिया के ज्यादातर देश न केवल भारतीय धार्मिक ग्रंथों पर गहन अनुसंधान कर रहे हैं बल्कि कुछ एक मैनेजमेंट कॉलेज में उदाहरण के तौर इन ग्रन्थों को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके अलावा दान, दया, क्षमा, सेवा, समर्पण, संस्कार, शांति जैसे भावों को प्रमुखता देने वाली भारतीय सनातन संस्कृति की महत्वपूर्ण देन योग, प्राणायाम, आयुर्वेद के प्रभावशाली परिणामों से प्रभावित हो कई राष्ट्र उसे अपनी दिनचर्या में शामिल करने के साथ विश्व के ज्यादातर देश भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान व दर्शन का अनुसरण कर रहे हैं और तो और कई देशों में तो कोरोना महामारी के बाद से मांसाहारी भोजन के प्रति लोगों के रुझान में भारी कमी देखी जा रही है।

वैश्विक आपदा के बाद भारत में तो आध्यात्मिक परिवर्तन देखने को मिले ही साथ ही वैश्विक स्तर पर भी इसका प्रभाव दिखाई दिया। विकसित और विकासशील देशों की यातायात व्यवस्थाएं ठप्प होने से जब अंतराष्ट्रीय व्यापार थम गया उससे कुछ देशों की अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई जबकि भारत अपने अध्यात्म और ज्ञान के बलबूते कम समय में सीमित जनहानि झेलकर कोरोना को मात देकर और अधिक मजबूत अर्थव्यवस्था के साथ शीघ्र ही उठ खड़ा हुआ। यहां तक कि भारत ने महाशक्ति की दौड़ में खड़े देशों का कोरोना को मात देने में मार्गदर्शन कर मनोबल बढ़ाये रखने का काम किया। अवसर का लाभ उठा, जिस वक्त अन्य देश महंगे दामों पर चिकित्सा उपकरण बेच रहे थे उस वक्त भारत ने अन्य देशों की सहायतार्थ अपने यहां निर्मित वैक्सीन हर नागरिक को निशुल्क उपलब्ध कराई साथ ही 21 जून विश्व 'योग दिवस' और आयुर्वेद जो प्राचीन भारतीय चिकित्सा की महत्वपूर्ण विधाए हैं, ने कोरोना को मात देने में जो अहम भूमिका निभाई भारत ने उससे दुनिया को अवगत कराया।

भारत ने अपने ज्ञान और अध्यात्म से आपदा को अवसर में बदलते हुए न् केवल दूसरे देशों पर अपनी निर्भरता कम की बल्कि 'वोकल फ़ॉर लोकल' के आह्वान ने स्वदेशी लघु और कुटीर उद्योगों को पुनः जीवित कर दिया। जिन रक्षा सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, कम्प्यूटर पाट्र्स आदि के लिए कल तक भारत दूसरे देशों पर निर्भर था आज स्वयं अपने यहां उनका निर्माण कर रहा है। चन्द्रयान–3 का सफल प्रक्षेपण करके भारत ने ये सिद्ध कर दिया कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में उसका कोई सानी नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि वर्तमान में, भारत जहां खड़ा है यह उसके आध्यात्मिक ज्ञान की परिणिति है। वह दिन भी दूर नहीं जब भारत न् केवल विकसित राष्ट्रों की सूची में शामिल होगा बल्कि अपने परम वैभव को प्राप्त करने में सफल होगा। ❑❑

अडाणी के विरोध पर स्वदेशी जागरण मंच ने उठाये प्रश्न चिन्ह

स्वदेशी जागरण मंच ने दावा किया कि कई भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण बंदरगाहों का अधिग्रहण करके, अडाणी ने वास्तव में यूरोप में माल परिवहन में भारत के हित को सुरक्षित कर लिया है। उनके मुताबिक, साथ ही अडाणी की रणनीति चीन को धमकी दे रही है।

स्वदेशी जागरण मंच के सह–संयोजक डॉ. अश्वनी महाजन ने दावा किया कि यूरोप में भारतीय सामानों के निर्यात के लिए अडाणी के बंदरगाह के अधिग्रहण ने चीन को यूरोपीय बाजार पर कब्जा करने की कड़ी चुनौती में डाल दिया है। जब अडाणी संस्था पर लगातार धांधली और भ्रष्टाचार के आरोप लग रहे हैं तो संघ के करीबी स्वदेशी जागरण मंच का इस तरह एक निजी संस्था के साथ खड़ा होना अहम माना जा रहा है। विपक्ष का आरोप है कि प्रधानमंत्री जब भी विदेश जाते हैं तो उनके उद्योगपति मित्र गौतम अडाणी का उस देश का कोई न कोई जिक्र जरूर हो जाता है। प्रधानमंत्री की हालिया ग्रीस यात्रा के बाद ऐसी खबरें सामने आईं कि देश के बंदरगाहों का अधिग्रहण अडाणी समूह द्वारा किया जाएगा। जबकि विपक्ष ने अडाणी–मोदी की मिलीभगत का आरोप लगाया है।

महाजन का दावा है कि अडाणी के लगातार बंदरगाह अधिग्रहण ने नई दिल्ली को भू–रणनीतिक रूप से मदद की है, और चीन को परेशानी में डाल दिया है। महाजन ने आज एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, अडाणी के कारण चीन के हितों को अच्छा झटका लगा है। हाफिया बंदरगाह पर अडाणी ने चीन को हराया।

कोलंबो के बंदरगाह में खो गया। यूरोप के प्रवेश द्वार मिस्र में अडाणी ने चीन को पछाड़ दिया है। और अब ग्रीस में कावला, वालोस और अलेक्जेंड्रोपोली अधिग्रहण को अंतिम रूप दे रहे हैं। वह एथेंस के पास पीरियस बंदरगाह के माध्यम से माल के परिवहन की संभावना भी तलाश रहा है, ताकि ग्रीस यूरोप में भारतीय सामानों के लिए 'प्रवेश द्वार' बन सके। महाजन के मुताबिक, आने वाले दिनों में मुंबई से समुद्र के रास्ते यूएई और वहां से ट्रेन के जरिए सऊदी अरब–जॉर्डन होते हुए इजराइल के हाफिया पोर्ट तक माल भेजा जाएगा। फिर हाफिया से समुद्र के रास्ते सामान ग्रीस पहुंचने के बाद उसे ट्रेन से यूरोपीय बाजार तक पहुंचाना संभव हो सकेगा।

महाजन ने दावा किया, परिणामस्वरूप, चीन को माल के निर्यात में बड़ा धक्का देना संभव होगा। बीस साल पहले चीन ने अपना सामान यूरोपीय बाज़ार तक ले जाने के लिए वन बेल्ट वन रोड नीति अपनाई थी। लेकिन मोदी सरकार ने अपने नौ साल के शासनकाल में भारत के उत्पादों को समुद्र के रास्ते यूरोप ले जाने की जवाबी रणनीति अपनाई। इससे माल के परिवहन की लागत कम हो जाती है और निर्यात बढ़ता है। महाजन का दावा है कि अडाणी ने समुद्री बंदरगाहों को हासिल करने में अहम भूमिका निभाई है। परिणामस्वरूप, भारत ने यूरोपीय बाज़ार में चीन को कड़ी प्रतिस्पर्धा में खड़ा कर दिया है। संघ के नेता अब विरोधियों, राष्ट्रहित का तर्क दिखाकर भाई–भतीजावाद को वैध बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

https://rashtriyakhabar.com/107567/

'रोजगार मतलब सरकारी नौकरी' की धारणा तोड़नी होगीः सतीश कुमार

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा चलाए जा रहे देशव्यापी स्वावलंबी भारत अभियान के तहत आज (शनिवार) महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय में छात्र संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रमुख वक्ता के तौर पर स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संगठक श्री सतीश कुमार मौजूद रहे। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए श्री सतीश कुमार ने कहा कि रोजगार मतलब सरकारी नौकरी की धारणा तोड़नी होगी।

उन्होंने कहा कि आमतौर पर कॉलेज में प्रवेश करने के साथ ही विद्यार्थियों के दिमाग में यह बातें आने लगती है कि हमें पढ़ाई करके अच्छी नौकरी खासकर सरकारी करना है और अपना भविष्य गढ़ना है। परंतु रोजगार के बारे में धारणाएं कुछ उचित नहीं है। जैसे की रोजगार मतलब सरकारी नौकरी, नौकरी देना सरकार का ही काम है।

तीसरा अच्छी पढ़ाई के बाद 25–26 साल के बाद ही नौकरी मिलेगी। परंतु इन धारणाओं को तोड़ते हुए लाखों युवा स्वावलंबन की राह पर बढ़ते हुए कम उम्र में ही आर्थिक सफलता के शिखर की ओर बढ़ते चले जा रहे है। यह सभी के लिए प्रेरणादायक है।

श्री सतीश कुमार ने उदाहरण देते हुए बताया कि रितेश अग्रवाल ने महज 18 साल की उम्र में ओयो की स्थापना की थी। आज उनकी कंपनी का हजारों करोड़ टर्नओवर है।

उन्होंनेन्हों नेबताया कि टाटा समूह के संस्थापक जमशेद टाटा ने 14 साल की उम्र में पहली कमाई की थी। फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग, एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब ने विपरी त परिस्थितियों के बावजूद अपने स्वावलंबन का लोहा मनवाते हुए विश्व के सबसे धनी बने हुए है। बाबा रामदेव भी एक बड़े उदाहरण के रूप में हमारे सामने हैं, जिन्होंनेन्हों नेपतंजलि उत्पादों की श्रृंखला खड़ी करके 40 हजार करोड़ की संपत्ति अर्जित की है। उन्होंने बताया कि एक सर्वे के अनुसार यूरोप के 72 फीसदी विद्यार्थी पढ़ाई के दौरान ही कुछ कुछ कमाई करने लग जाते हैं।

श्री सतीश कुमार ने कहा कि बेहतर भविष्य के लिए स्वरोजगार उद्यमिता के बारे में अभी से सोचना अब विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। कुछ बड़ा सोचें, नया सोचे और आउट ऑफ बॉक्स सोचें। उन्होंनेन्हों नेकहा कि भारत आज विश्व की तीसरी आर्थिक महाशक्ति है। सारी दुनिया की निगाह भारत पर टिक गई है। हमारे यहां 65 फ़ीसदी आबादी युवाओं की है। ऐसे में भारत के पास पुराना गौरव पुनः प्राप्त करने का सुनहरा अवसर है। उन्होंने स्वावलंबी भारत अभियान पर बताया कि हम इस अभियान को जोर–जोर के साथ जन–जन तक पहुंच रहे हैं ताकि लोगों की सोच बदले। हमारा प्रयास यह भी है कि भारत में कोई भी हाथ खाली ना रहे हर हाथ को रोजगार मिले, हर हाथ को काम मिले। भारत की युवा पीढ़ी अपनी सोच को नई उड़ान दे।

इस दौरान उपस्थित 500 विद्यार्थियों से सतीश कुमार ने पूछा कि पढ़ाई के साथ–साथ कितने विद्यार्थी हैं, जो कमाई भी करते हैं। 35 विद्यार्थियों ने पढ़ाई के साथ–साथ कमाई करने की भी बात कहीं। कार्यक्रम में युवा स्टार्टअप मिस्त्री प्वाइंट के रोहित नागवानी तथा राहुल गोयल को उन्होंने सम्मानित भी किया। इस अवसर पर स्वदेशी जागरण मंच के प्रांत संयोजक जगदीश पटेल, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ एम.एस. मिश्रा, भारतीय विपरण विकास केंद्र के प्रबंधक सुब्रत चाकी, नवीन शर्मा, देवेंद्र गुप्ता, जीआर जगत सहित महाविद्यालय के शिक्षकगण भी उपस्थित रहे। आभार प्रदर्शन प्राध्यापक डॉ श्वेता तिवारी ने किया।

https://www.hindusthansamachar.in/Encyc/2023/8/12/Government-job-perception-has-to-be-broken-Satish.php

विकास के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है देशः डॉ. राजीव कुमार

स्वावलंबी भारत अभियान के राष्ट्रीय सह–समन्यवक डॉ राजीव कुमार ने कहा कि आज देश हर क्षेत्र में विकास कर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। प्रयाग महानगर के कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित 'बेरोजगार मुक्त भारत का संकल्प' विषय पर 'उद्यमिता सम्मेलन व विचार गोष्ठी' को संबोधित

करते हुये डॉ. राजीव कुमार ने कहा कि आज युवाओं में नवाचार तथा नीतिगत बदलावों के माध्यम से हम उन्हें रोजगार देने वाला बनाएंगे। युवाओं के बीच एक विमर्श रखा जाता है कि उन्हे रोज़गार नहीं मिल रहा है, आज इस प्रकार से नीतिगत बदलाव किए जा रहे हैं और उद्यमिता को बढ़ावा दिया जा रहा है कि युवा खुद रोज़गार प्रदान करने वाले बनेंगे और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाएंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के प्राचार्य प्रो. आनंद शंकर सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वन के बाद परिसरों में सकारात्मक बदलाव दिखाई दे रहा है। जहां औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर आकर हम अपनी समृद्ध संस्कृति और ज्ञान परम्परा आधारित चीजों को अपना रहे है। वहीं उद्यमिता जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी युवाओं को बढ़ावा देने का भी कार्य किया जा रहा है। इस तरह की संगोष्ठियों से युवाओं को रोजगार के क्षेत्र में एक नई दिशा मिलती है। साथ ही उनके दृष्टिकोण में भी बदलाव आता है। आज इस तरह के प्रयास परिसरों में भी किए जाने आवश्यक है, जिससे युवाओं को स्वावलम्बी बनाया जा सके। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में एमएनएनआईटी के प्रो. आर.पी. तिवारी उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ अखिलेश त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में प्रयाग विभाग के विभाग संगठन मंत्री प्रभाकर तिवारी, डॉ. "विवेक कुमार राय डॉ. विकास सिंह, डॉ. हर्ष मणि वी.के. सिंह सहित कई लोग उपस्थित रहे।

https://up.punjabkesari.in/uttar-pradesh/news/today-the-country-is-setting-new-records-of-development-in-every-field-abvp-1872233

उद्यमित्ता के माध्यम से बढ़ा सकते है विकास की गतिः राज्यपाल

हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा है कि उद्यमिता के माध्यम से हम समाज को सशक्त बना सकते हैं। इसके द्वारा विकास की गति को तेजी से बढ़ा सकते हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत भारतीय उद्योग को स्वायत्तता प्रदान करने और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने ने कहा कि उद्यमिता को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न उद्यमिता संबंधित

प्रशिक्षण कार्यक्रम और कोर्सेस की शुरुआत की है।

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) में विश्व उद्यमिता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन में संबोधित कर रहे थे। इस सम्मेलन में अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख स्वावलंबी भारत अभियान से श्री दीपक शर्मा और भारत भूषण मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद रहे। हकृवि के छात्र कल्याण निदेशालय एवं राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना द्वारा आयोजित किए गए इस सम्मेलन की अध्यक्षता कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने की। इसके अलावा राज्य एनएसएस अधिकारी, हरियाणा डॉ. दिनेश कुमार भी मौजूद रहे। राज्यपाल ने कहा कि स्टार्टअप इंडिया अभियान स्टार्टअप्स को आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करने में मदद कर रहा है। इस अभियान के तहत स्टार्टअप्स को वित्तीय सहायता, मेंटरिंग और विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। उद्यमिता के माध्यम से हम न केवल अपनी व्यक्तिगत सफलता की दिशा में आगे बढ़ते हैं, बल्कि हम समाज में नए रोजगार भी सृजित करते हैं, जिससे समाज को समृद्धि की दिशा में आगे बढने का मौका मिलता है।

राज्यपाल ने कहा कि कुशल भारत मिशन में प्रत्येक वर्ष एक करोड़ से अधिक युवा शामिल हो रहे हैं। कौशल विकास के माध्यम से युवाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पहली बार कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय का गठन किया गया है। उन्होंने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की सराहना करते हुए कहा कि यह युवाओं को उद्यमी बनाने में लगातार प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ ही अग्रणीय काम कर रहा है। कृषि क्षेत्र में स्वरोजगार की अपार संभावनाएं है, जिसमें फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, चारा उत्पादन, पशुपालन एवं मुर्गी पालन को स्वरोजगार के रूप में शुरू कर कम लागत में भी अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान व कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से पिछड़े वर्ग की महिलाओं और युवाओं को विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने ने युवाओं से भी आह्वान किया कि वे अपने स्वप्नों का पीछा करें, सोचने की क्षमता विकसित करें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए अपना योगदान देने का संकल्प लें।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता श्री दीपक शर्मा ने वर्तमान समय में भारत में विभिन्न व्यवसायों की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने ने बताया कि हमारे पास उद्यमिता एकमात्र विकल्प है। इस अवसर पर राज्यपाल ने सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित की गई 150 महिलाओं को सहायता सामग्री व प्रमाण–पत्र वितरित किए तथा एबिक द्वारा प्रकाशित 'एबिक के सफल स्टार्टअप' नामक पुस्तिका का विमोचन किया।

इससे पूर्व उन्होंने हकृवि के एबिक, सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान और स्वावलंबी भारत अभियान द्वारा प्रशिक्षित उद्यमियों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और विश्वविद्यालय में बनने वाले 240 मकानों का शिलान्यास किया। इससे पहले छात्र कल्याण निदेशक डॉ. अतुल ढींगढीं ड़ा ने सभी का स्वा गत किया, जबकि स्नात्तकोतर शिक्षा अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने धन्यवाद किया। सम्मेलन में कृवि के अतिरिक्त जिले के विभिन्न स्कूलों व महाविद्यालयों से भारी संख्या में छात्र व छात्राएं भी शामिल हुए।

https://www.hindusthansamachar.in/Encyc/2023/8/21/Empowerment-can-increase-the-pace-of-development.php

छात्रों ने सीखा सफल उद्यमी बनने का गुर

स्वावलंबी भारत अभियान के अंतर्गत स्वदेशी जागरण मंच की ओर से कच्चा बाबा इंटर कॉलेज जाल्हूपुर (वाराणसी, उ.प्र.) में उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में मंच के विभाग संयोजक व अभियान के जिला समन्वयक शैलेन्द्र पाण्डेय ने छात्र–छात्राओं को एक सफल उद्यमी बनने का गुर बताया। साथ ही समाज के कुछ सफल उद्यमियों का उदाहरण भी उनके समक्ष प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला पर्यावरण प्रमुख आनंद प्रकाश ने जैविक खेती, जैविक कीटनाशक, एवं जैविक खाद बनाकर कैसे धनोपार्जन करें इसकी जानकारी दी। इसके पहले सत्येंद्र कुमार सिंह ने स्वावलंबी भारत अभियान व उद्यमिता के बारे में बताया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन से हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विजय प्रताप सिंह, संचालन महानगर संयोजिका कविता मालवीय, धन्यवाद ज्ञापन महानगर सह संयोजक नवीन कुमार सिंह ने दिया। सम्मेलन में मंच के जिला संयोजक कन्हैया लाल भारती, कॉलेज के प्रवक्ता मुकेश कुमार सिंह, अनिल कुमार सिंह आदि भी मौजूद रहे। ❑❑

https://udaipurkiran.in/hindi/in-the-entrepreneurship-promotion-conference-students-learned-the-trick-of-becoming-a-successful-entrepreneur/

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश सरकार ने कसा माफिया, गुंडे, बदमाशों और आतंक पर शिकंजा

मध्यप्रदेश शांति का टापू है, यहाँ अशांति फैलाने वालों की खैर नहीं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के कड़े फैसले और प्रशासनिक कसावट से प्रदेश में कानून का राज स्थापित है। प्रदेश की शांति व्यवस्था में खलल डालने की कोशिश करने वालों को कड़ी कार्रवाई का सामना करना पड़ रहा है। माताओं, बहनों, बेटियों की ओर गलत नजर उठाने वालों के घरों पर बुलडोजर चल रहे हैं। बच्चियों के साथ दुराचार करने वालों को मृत्युदंड दिया जा रहा है। प्रदेश में एंटी माफिया अभियान चलाकर भू-माफिया, चिटफंड माफिया, शराब माफिया, खनन माफिया, राशन माफिया, मिलावट माफिया और दबंगों के विरुद्ध सख्ती से कार्रवाई की जा रही है।

▫ तोड़ी माफिया की कमर

प्रदेश सरकार ने भू-माफियाओं से हजारों एकड़ से ज्यादा सरकारी भूमि मुक्त कराई है। अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध 1 हजार 161 प्रकरण दर्ज कर 605 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। शासकीय भूमि पर अवैध कब्जा करने वाले 227 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका एवं 582 आरोपियों के विरुद्ध जिला बदर की कार्रवाई की। आदतन अपराधियों और गुंडों पर भी पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है।

▫ पुलिस कमिश्नर प्रणाली

कानून-व्यवस्था में वर्ष 2022 ऐतिहासिक उपलब्धियों वाला रहा। भोपाल और इंदौर की कानून-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाये रखने के लिये पुलिस कमिश्नर प्रणाली लागू की गई।

▫ नक्सली उन्मूलन

पिछले 23 वर्षों में पहली बार वर्ष 2022 में एक वर्ष में एक करोड़ 14 लाख रुपए के 6 इनामी नक्सली मार गिराये गये। इतिहास में प्रथम चार डिवीजनल कमांडर स्तर के नक्सली को मार गिराया गया और 2 एके-47 जब्त की गई।

गांजे की खेती करने वाले धराए

अवैध शराब बेचने वालों को पकड़ा

▫ ऑपरेशन मुस्कान

प्रदेश में जोर-जबरदस्ती, बहला-फुसलाकर विवाह और धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए धर्म स्वातंत्र्य विधेयक लागू। इसमें 110 से अधिक प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है। वर्ष 2018 से अब तक बच्चियों से दुष्कर्म करने वाले 42 दोषियों को मृत्युदंड की सजा। ऑपरेशन मुस्कान में वर्ष 2022 में अपहृत 9 हजार 413 बालिकाओं और 2 हजार 205 बालकों को मुक्त कराया गया।

▫ साइबर अपराधों पर अंकुश

राज्य सरकार साइबर अपराधों से निपटने के लिए सजग। सोशल मीडिया पर निरंतर नजर। देश को कमजोर करने की गतिविधियों में संलग्न संगठनों पर लगातार कार्रवाई।

▫ डकैतों का हो गया सफाया

प्रदेश में डकैतों का आतंक अब पूरी तरह खत्म। डकैतों के सभी बड़े लिस्टेड गैंग का खात्मा करने में पुलिस को बड़ी सफलता मिली। सूदखोरों पर पुलिस ने शिकंजा कसा। नशे और इसकी लत को रोकने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं।

- **खनन माफिया:** 13 हजार 178 अपराध दर्ज। 24 हजार 092 से अधिक चार पहिया वाहन 3 लाख 54 हजार 528 घन मीटर अवैध रेत जब्त। 04 रासुका एवं 34 जिला बदर।
- **राशन माफिया:** 1626 अपराध दर्ज कर 1780 आरोपी गिरफ्तार कर लगभग 91 करोड़ रुपये मूल्य के खाद्य पदार्थ जब्त एवं 68 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई।
- **चिटफंड माफिया:** 1 लाख 47 हजार 532 से अधिक निवेशकों को करोड़ों की राशि वापस दिलाकर राहत पहुँचाई गई। 860 प्रकरण दर्ज।
- **शराब माफिया:** 4 लाख 21 हजार से अधिक प्रकरणों में 3 लाख 57 हजार से अधिक आरोपी गिरफ्तार। 40 लाख 72 हजार लीटर अवैध शराब एवं 4005 वाहन जब्त।
- **मिलावट:** 4392 प्रकरण दर्ज एवं 657 आरोपी गिरफ्तार। लगभग 27 करोड़ रुपये के मिलावटी खाद्य पदार्थ जब्त। 85 व्यक्तियों के विरुद्ध रासुका की कार्रवाई।

(01 अप्रैल 2020 से 31 मार्च 2023 तक)

पुलिस की पैदल गश्त से अपराधियों में खौफ, प्रधानमंत्री ने भी पहल को सराहा

प्रदेश पुलिस द्वारा मूलभूत पुलिसिंग में शुरू की गई पैदल गश्त की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी प्रशंसा की है। बीट व्यवस्था, माइक्रो बीट सिस्टम, औचक निरीक्षण, कोंबिंग ऑपरेशन और रात्रि गश्त व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

पुलिस के सड़क पर मौजूद होने का असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण के साथ सामान्य व्यवस्था बनाए रखने में प्रभावी होता है। सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों में चल रही भ्रांतियों और गलत जानकारियों का तत्काल खंडन किया जा रहा है। आवश्यकता होने पर उपयुक्त कार्रवाई भी तत्काल सुनिश्चित की जा रही है।

असली हीरो को सम्मान

मध्यप्रदेश में अपराधियों का सामना करने में साहस और वीरता का परिचय देने वाले नागरिकों को असली हीरो सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है। इनमें बड़वानी की वर्षा बाई बारेला, कमला बाई और भूरी बाई, मुरैना के मुकेश सिंह गुर्जर, दमोह की मोनिका पिंकी अहिरवार, इंदौर की प्रगति शिवनी, सुशी और छतरपुर के शिवम तिवारी को असली हीरो प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए हैं।

पुलिस को मिले पुरस्कार

प्रदेश को इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा डिजिटल इंडिया अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया है। प्रदेश को ई- विवेचना एप के उपयोग के लिये ***इनिशिएटिव एट ग्रास रूट*** लेवल केटेगरी में प्रथम पुरस्कार मिला। एन्युअल इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी समिट में मध्यप्रदेश साइबर पुलिस को पुलिस की क्षमता निर्माण में प्रथम पुरस्कार और ***साइबर कॉप ऑफ द ईयर में दूसरा पुरस्कार मिला है।***

जनसंपर्क विभाग

स्वदेशी पत्रिका डाक तिथि 15–16 सितंबर 2023
एल.पी.सी. दिल्ली, दिल्ली पी.एस.ओ., दिल्ली आर.एम.एस. दिल्ली–06
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह 10 तारीख

डाक पंजी. संख्या DL-SW/01/4074/2021-23
रजि. आर.एन.आई. पंजी. संख्या 64697/96

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना

₹ 3000 तक बढ़ेगी राशि

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

21 वर्ष से ही मिलेगा लाभ

1 करोड़ 25 लाख बहनों को हर महीने ₹ 1000

राजकुमारी
चकरपुर गांव, निवाड़ी
"योजना के एक हजार में अपने परिवार पर खर्च करूंगी। मेरे खाते में पैसा होगा तो जब जरूरत पड़ेगी तब खर्च करूंगी।"

मृदुलेश शुक्ला
बड़ा बाजार, पन्ना
"मुख्यमंत्री जी इस योजना में जो राशि हमें दे रहे हैं उससे बच्चों की पढ़ाई और घर में पौष्टिक खाने के खर्च में मदद मिलेगी।"

मोनालिसा मिश्रा
कुदरा टोला, शहडोल
"हम बहनों के लिए एक सीधी सच्ची योजना की जरूरत थी। सीधे हमारे खाते में पैसे आएंगे। हमारा मान सम्मान बढ़ेगा।"

अनीता विश्वकर्मा
संकटमोचन कॉलोनी, राजगढ़
"मेरे पास आय का कोई साधन नहीं है। ऐसे कठिन समय में मुख्यमंत्री जी की यह योजना मेरे लिए वरदान से कम नहीं है।"

चाहना
बिरसा मुण्डा वार्ड, कटनी
"मैं अपने बच्चों को पढ़ाना चाहती हूँ। मुख्यमंत्री जी की इस योजना से हमारे पूरे घर में खुशी है।"

संपर्क : ग्राम पंचायत, वार्ड कार्यालय और जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, हेल्पलाइन नंबर 0755-2700800

प्रकाशक व मुद्रक डॉ. अश्वनी महाजन द्वारा स्वदेशी जागरण समिति के लिए काम्पीटेंट बाईन्डर्स (प्रिंटिंग यूनिट), नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित और धर्मक्षेत्र, सेक्टर–8, रामाकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110022 से प्रकाशित, संपादकः अजेय भारती